

For Private and Personal Use Only



For Private and Personal Use Only

॥ श्रावंकटश्वरायनमः॥ भर्मि आशासेच पुनरीहशा अनेके यन्थाः भवदीयोद्यमविलसितं ***** श्रीकृष्णदासात्मजो गङ्गाविष्णुः

विज्ञापनम्.

पुरा किलास्मिन् भारतवर्षे वेदमार्गानुयायिनस्तद्र्थवोधौपयिकव्याकरणा दिषडङ्गकर्तारः पाणिन्यादयस्तथा मीमांसीन्यीयसाङ्ख्ययोगीख्यषड्द्र्शनिन मीतारो जैमिन्याद्यो वेदोक्तधर्मप्रतिपादकस्मृत्यादिप्रवक्तारो याज्ञवल्क्याद्य अश्वलोकिकज्ञानशालिनो मुनयो जिज्ञरे ते चाजिघृक्षवोऽपि तदानीन्तनेः प्रबला रातिहृद्यपाटनपटुतरोहण्डभुजदण्डविराजमानैग्णिगुणग्राहकेर्न्थेदानमानादि-

ना सत्कृता यथासुखं काळं निन्युः, पश्चात् पूर्वजस्थापितधर्मपरायां मनिसन्ततो धानकाव्यनाटकादिजनितारे। महाकवयः, काव्यादिगुणदोषवि चककारिकादिग्रन्थात्पादका नाट्यालङ्गरतत्त्वज्ञा गीतवाद्यनृत्यादिकला भरतादयश्च स्वधर्मपरायणा एव सम्बभूवुः ततस्तन्मार्गवर्तिनः कालिदासादये ऽपि तत्कालीननृपेः सभाजिता मुमुदिरे. तद्नु उद्गिदगायातयवनैराजवत्यस्मि न्देशे गीर्वाणभारती बहुलपक्षचन्द्रइवानुदिनं ह्रासमेवाप्नोदाप्नोति च. जनदैर्ि भ्यजनितवेदशास्त्राचपरिशीलनशालिलादवीचीनानां प्रायशः सदाचार

छोपो दुरितप्रदितश्च प्रादुरभूत् दुःखोदकंमेतत्सकछैहिकामुष्मिकार्थहानिकर तदेतत्सर्व समालोच्य मिथिलदेशान्तर्गतद्रभङ्गाराजधानीस्थेन विविधिबरु दावलीविर जम नमानोन्नतमहाराजाधिराजमिथिलाधीशश्रीरुद्रसिंहकुमारबाबु श्रीश्रीमद्भुगेश्वरसिंहेन दानमानादिसन्तुष्टस्वाश्रितविद्वन्मण्डलीकारित एष पूजा ाङ्कजभास्करनामा **यन्था मन्निकटे ऽङ्क**नायप्रैष्यत सो ऽयं स्वानुष्ठानजन्येन महता पुण्यचयेन सर्वेषां भारतवासिनां पूर्वजस्थितित्रापकः स्यात्, अनेनच पुरातनधर्मः 🎏 शुक्कपक्षशशीव प्रत्यहं रुद्धिं रुभेदिति सर्वेषाम्बद्धुरुदिरपात्रङ्कत्यमेनत्, मयेतन्मुद्र

२

17,

376

णंदृढपत्रेषु सर्वजनसौलभ्याय स्थूलायसाक्षरैःकृतायं प्राकट्यमनायीत्यलम्. जम्बद्दीपोदरगतिमदं भारतं वर्षमस्मिन् नीरुद्यः प्राक्ककुभि मिथिलारूयो ऽस्तितद्राजधानी ॥ गुण्यैः स्तुत्यैर्धनिकनिवहैर्मौनहन्त्री मुनीनां संप्रत्य स्ति स्वरिव दरभङ्गारूयया लोकवित्ता ॥ १ ॥ तस्यान्द्रोढा कुपथगनृणाञ्चा वमन्ता रिप्णान्दोग्धार्थानां सपदि गुणिसद्भत्तयोर्वाञ्छतानाम्॥आदौश्री मद्रुणपद्युतामीश्वरारूयान्द्धानः सिंहान्तां यो वसति मिथिछेशात्मजो ऽन्वर्थनामा ॥२॥ चित्रं यत्कविभिरवर्णिवर्ण्यतेऽपि बन्युत्तंसमुखविचुन्बिनी

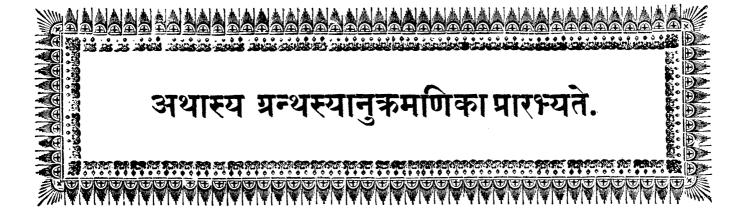


↑*****************************

यदीया॥ आद्वीपादिशिदिशिसन्ततं भ्रमन्ती निन्दन्तीभुवनमचन्द्रिकंचकी तिः॥ ३॥ यत्प्रोत्साहप्रकटितिधयान्धीमताञ्ज्ञानिबन्बं पूजापद्मार्के इह भ गवद्वामदाताजानिष्ठ॥ श्रीरुद्रस्य प्रथितिमिथिलाधीश्वरस्यात्मजोयो भूया त्सो ऽयं सकलहितकृद्धर्मगोप्ता चिरायुः॥ ४॥ श्रीकृष्णापेणमस्तु॥ छ॥

श्रीकृष्णदासात्मजस्य गंगाविष्णोः





पु०प० पु०प०

॥ अथेयं पूजापङ्कजभास्कराभिधयन्थस्थविषयानुक्रमणिका छिरूयते ॥

विषयाः पंक्तिः पंक्तिः। पत्रं पृष्ठं पत्रं विषयाः पंक्तिः पत्रं विषयाः 'पृष्ठं पृष्ठं ¹वशावली · • जाविचारः अयदेवपूजाधार Ģ प्रमाणयन्थनिर्देशः तदयसमुदायाथेः विचारः : 18 **अथनित्यपू**जा देवपजायामधि तथा चायम्भ कर कारानधिकारौ. 4 णा येः • • कालः Ģ 90 9 **स्त्रीशूद्रयोः गा**ल तदयम्प्रकरणार्थः अय देवपूजाया 83 यामशिलार्चने । अथ देवपूजाना**म्** रू ङ्करणमन्त्र व्यापरीभाववि विचारः∙ 米米米米米米米米米 विचारः 96 तदयस्प्रकरणार्थः 66 तदयम्प्रकरणार्थः 86 Q S चारः ∙ । अथनित्यक्राम्य रू तदयंसमुदायार्थः 83 अयोपनारपात्रा

अनु०

11 9 11

| विषयाः | पत्रं | पृत्रं | पक्तिः | विषयाः | पत्रं | ਬੁਝ | पक्तिः | विषयाः | पत्रं | पृष्ठ | पंक्तिः |
|------------------|-------|--------|--------|------------------------|-------|-----|--------|---------------------------|-------|-------|---------|
| णि · · · · | 20 | 9 | २ | वसनम् · · · | २७ | २ | Ę | दिधारणम् · · | ४४ | 8 | 2 |
| तद्यंसमुदायार्थः | २१ | २ | e | उपवीतम् · · · | 20 | २ | Ę | जलप्रतिमादावा | | | |
| अयोपचारिवचा | ` ` | ' | | गन्धः · · · | 20 | २ | 6 | वाहनियसर्ज | | | |
| ₹: | २२ | २ | 8 | अथपुष्पाणि · · | २८ | 9 | २ | नविचारः 😶 | ४१ | २ | 8 |
| न्त्रासनम् · · · | ર૪ | २ | . 9 | धूपः · · | 39 | 3 | ર | उपचारेहस्तनिय | | | |
| वागतम · · · | २५ | 9 | 8 | दीपः • • | 38 | २ | 8 | मः · · · | ४२ | २ | 9 |
| गद्यम \cdots 🕟 | २५ | 9 | Ģ | नैवेद्यानितु ् | ३२ | 1 | 3 | उपचारश्रोक्षणवि | | | |
| अर्ध्यमे · · · | २५ | 9 | Ģ | सूर्यादिभ्योदत्तनै | | 1 | | चारः · · | ४३ | २ | 8 |
| आचमनीयम् | २५ | 2 | 8 | ूँ वेद्यप्रतिपत्तिः | ३४ | २ | 3 | पूजायांदि <u>ङ्</u> चियमः | 88 | 15 | 2 |
| मधुपर्कः • े • । | २५ | 2 | ६ | वन्दनम् · • • • | ३५ | 9 | 8 | सोवाहनदेवता | | 1 | |
| नानीयद्रव्यप्रति | , , | | | तदयम्यकरणार्थः | ३५ | 9 | 4 | ्ध्यानम् · · · | ४५ | 8 | 8 |
| पत्तिः • • • | २६ | 8 | 8 | पूजाकालेसुवर्णा | | | 1 1 | तिलकधारणम्. | ४५ | 18 | ६ |

| · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | विषयाः | पत्रं | पृष्ठ | पंक्तिः | | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः | | पत्र | 123 | पंक्तिः | ፟ዹጙጙጙጙጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜ |
|---------------------------------------|--------------------------|-------|-------|---------|-------------------|-------|--------|---------|-------------------|------------|-----|---------|---|
| २॥∥क्रे | स्नानीयादौघण्टा | | | | णि | ५१ | १ | 4 | णि · · · | ५६ | 1 | 8 | * |
| 光 | वादनम् · · | ४५ | 3 | 8 | विहितनिषिद्धानि | | | | अथामिपूजाध्या । | | | | * |
| * | गीतवाद्यादिकरणं | ४५ | 3 | 3 | तुः | ५१ | 2 | 8 | नञ्च ू · · । | ५६ | २ | 8 | * |
| * | प्रकरणार्थः 😲 | ४६ | 8 | ६ | निषद्धानितु | ५१ | २ | ६ | अथदुग्गोपूजा | <i>५७</i> | २ | १ | 泰 |
| ** | अथदेवपूजाप्रयो | | | | पंत्रेषुविहितानि | ५१ | २ | 0 | अस्याध्यानम् · · | ५७ | २ | 8 | 썇 |
| * | गः \cdots | 88 | 3. | 8 | ध्रुपास्तु · · · | ५२ | २ | 3 | अस्याअघेः 🕠 | 46 | २ | ६ | * |
| * | अथसूर्य्यपूजा · · | ४९ | २ | Q | अस्यदापे · · · | ५२ | ે ર | 19 | गन्धास्तु · · · · | ५९ | 9 | १ | * |
| 茶 | अस्यध्यानं म् · · | ५० | १ | 3 | नैवेद्यानित् 🕠 | ५३ | 9 | 9 | पुष्पाणितु | 49 | 9 | २ | * |
| * | अस्यार् <u>च</u> ेभविष्य | • | • | | अथायमत्रप्रयोगः | લે 8 | 1 8 | e | पत्राणित · · · | ५२ | २ | 8 | * |
| * | पुराणम् · · · | ५० | २ | ६ | अथगणपतिपूजा | ५५ | 2 | 3 | ध्रुपे | ફ ે | 9 | 9 | * 11 |
| * | तत्रादौगन्धाः | 49 | ર | 2 | अस्यध्यानम् े । | ५५ | 2 | 3 | दीपे · · | દે ૦ | 8 | वे | * |
| * | अथविहितपुष्पा | 1.2 | , | 1 | निषिद्धपुष्पपत्रा | , , | | ` | नैवेद्यम् · · | Éo | 9 | 8 | 至 |

| ् विषयाः | पत्रं | ਉਲੰ | पंक्तिः | विषयाः | पत्रं | ्र पृष्ठं | पंक्तिः | विषयाः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|-------------------------------------|-------|-----|---------|--|-------|-----------|---------|-------------------|-------|--------|---------|
| पूजाप्रयोगस्तु • • | ६० | २ | 8 | द्रीपेघृतम् · · · | ६६ | २ | 9 | मेत् · · · • | ६८ | 2 | 8 |
| अथित्रिवपूजी सा | • | | | नैवेद्यम् • • • | ६६ | 2 | 9 | अथविष्णुपूजा • | ६८ | २ | Ę |
| चलिङ्गेप्रशस्ता | ६० | २ | Q | अथारात्रिका \cdots | ६६ | २ | 8 | शाल या मादीवि | | | , |
| लिङ्ग इ व्याणि | ६१ | 8 | 8 | अथनमस्कारः | ६६ | २ | 9 | ष्णुपूजाप्रशस्ता. | ६९ | २ | २ |
| अथध्यानम् · · | ६३ | 2 | 4 | मुखवाद्यम् • • • | 69 | 9 | 8 | ध्यानंतु · · · | 98 | 18 | 8 |
| गन्धद्रव्याणि · · पुष्पाणिविहिता | ६४ | २ | 9 | प्रयोगस्तु · · · · । एतन्नैवेद्यस्याम | 69 | 3 | વ | अध्ये | 98 | २ | १ |
| नि \cdots | ६४ | २ | 9 | क्ष्यत्वे · · · | 93 | 2 | 4 | ङ्खः प्रशस्तः | 98 | २ | 9 |
| निषिद्धपुष्पपत्रा | • | | | लिङ्गद्दयमेक का | • | | | घण्टावादनम् · · | ७२ | 2 | 8 |
| णि. · · | ६५ | 2 | 8 | लेनाच्यम 🕠 | ६८ | 9 | 9 | गन्धद्रव्याणि • • | 43 | २ | ie. |
| विहितपत्राणि · · | ६६ | 9 | 9 | गूद्रस्पृष्टं लिङ्गं | · | ` | | पुष्पाणिविहिता | | | |
| धूपास्तु. • • • | ६६ | 9 | 8 | हरिञ्चनन | | 1 | | नि · · · · | 98 | 9 | २ |

| * 中 中 中 中 中 中 中 中 一 十 十 十 十 十 十 十 十 十 十 十 | विषयाः | पत्रं | पृञ् | पंक्तिः | विषयाः | पत्रं | ਪ੍ਰਤਾਂ | पंकिः | विषयाः | पत्रं | পূৰ্ভ | पंक्तिः | ·************************************ |
|--|------------------------------------|-------|------|---------|-------------------|-------|--------|-------|------------------------|-------|-------|---------|---------------------------------------|
| पूर्ण 🕌 | धूपास्तु · · · · · | ७५ | 8 | ५ | अष्टाक्षरमन्त्रेण | | | | न्तुः ः । | ९२ | २ | 8 | क्ष अनु |
| | | 198 | 8 | 3 | विष्णुपूजा • • | 64 | २ | 9 | आगमोक्तेष्ट देव | | | | * |
| ************* | नैवेद्यानितुः 🕠 | ७६ | 8 | 6 | जपोप्यस्यातिप्र | | | | ता पूजा • • • | ९३ | २ | 8 | * |
| * | वस्त्रम् · · · · · | 99 | 1 | ६ | शस्तः · · · | ८६ | २ | २ | रजत द्ववणधारणं | ९३ | 3 | 8 | * |
| * | गीतवाद्यादि • • | Se | 8 | 3 | अथप्रदक्षिणम् . | ୧୬ | 8 | 9 | आचमनम् · · · | ९४ | 8 | 8 | * |
| * | नीराज्नम् · · · · | Se | 3 | 8 | अथनमस्कारः | ८८ | 9 | 8 | सामान्यार्घः • । | ९४ | 8 | 8 | * |
| * | पूजाप्रयोगस्तु · · | 90 | 3 | ५ | अथविसर्जनम् . | ८९ | 8 | ५ | मूलमन्त्रस्तु · · | ९५ | 8 | २ | 釆 |
| 光 | अथपुरुषस्क्तन | | | | अथपादोदकधा े | | | | अर्घादिपात्रम् • • | ९५ | 8 | ६ | * |
| 来 | विष्णुपूजा · · ध्यानय्यथा · · · | ૮૦ | 1 | 9 | रणम् · · · | ८९ | २ | २ | द्वार्देवतापुजा · · | ९५ | २ | 8 | * |
| 來 | ध्यानय्येथा · · · | ८० | 1 | Q | नैवेद्यभोजनम् • | ९० | १ | ६ | विद्योस्सारणम् · · | ९७ | 8 | १ | * |
| 茶 | पूजाक्रमः · · · । | ८१ | 2 | 3 | अथापराधः • • | 63 | २ | 8 | आ्सनपूजा 😶 | 610 | 9, | e | 乗 川 考 |
| * | अथैतत्त्रयोगः · · | ८३ | 9 | Q | अपराधक्षमापन | | | | पूजोपकरण स्थाप | | - | | * |

| विषयः | पत्रं | पृष्ठ | पंक्तिः | विषयः | पत्रं | ਬੂ ਤਂ | पंक्तिः | विषयः | पत्रं | ਪ੍ਰ ਣ | पंक्तिः |
|---------------------------------|--------------|-------|---------|--------------------|-------|--------------|---------|-------------------|-------|--------------|---------|
| नस्थानम् • | ९८ | 9 | e | न्त्रेप्रशस्ता 😶 | 893 | 2 | 4 | आरात्रिकम् 😶 | १२४ | २ | ₹ |
| भूतशुद्धिः • • • | ९९ | 9 | 3 | आवाहनप्रकारः | ११३ | 8 | 8 | ततःप्रदक्षिणम् 🐺 | १२५ | 8 | . 8 |
| अथप्राणस्थापनम् | ૧ ેવે | વે | e | प्रतिष्ठितप्रतिमा | | • | | सर्वकर्मसमर्प | | | |
| मातृकान्यासः • • | 903 | २ | e | शालप्रामादि | | | | णम् | १२५ | 1 | 3 |
| प्राणायामः | 800 | વ | 9 | ष्वा वाहनादि | | | | विसर्जनम् 🕠 | १२५ | 8 | ६ |
| पी डन्यासः · · · · | 800 | ર | e | विचारः · · · | ११५ | 9 | Q | निर्माल्यक्षेपणम् | १२५ | २ | 8 |
| मानसपुजा · · | १०९ | 9 | 3 | कुण्डलिनीतु द्विवि | | | | चरणोदकमहणा | | | |
| विदो पार्घस्थापनं. | ૧ે૦ ૬ | વે | 4 | ॅधा ∙ ∙ ें ∙ ∙ | ११६ | 8 | 8 | दि | १२५ | २ | ₹ |
| | રે ૧૧ | 2 | e | षोडशोपचाराः | ११६ | 1 3 | २ | सङ्क्षेपपूजा • • | १२५ | २ | 9 |
| पीडपुजा · · · · पूर्वादिदिङ्निय | ,,, | ` | | पूजाङ्गहोमः 😶 | १२० | 8 | ६ | मालानि र्णयः • | १२६ | २ | Q |
| H : · · · · · | ११२ | Q | 9 | अथ जपात्पूव्वाम | | } | | वस्त्रादिनिम्मित | | | |
| अथपूजासाचय | 771 | , | 1 | तिकर्त्तव्यता · · | १२१ | 9 | २ | गोमुखविचारः | १२८ | २ | 9 |

| पूर्ण । पूर्ण । पूर्ण । भूभू भूभू भूभू भूभू भूभू | 4 4 4 | ख्या व्य •• १२९ | पृष्ठं पं चि २ ६ १ ६ | पार्थिविद्यावितंग पूजा • • • • ब्रह्मपूजा • • • पूजोत्तरकृत्यम्, काम्यपूजानाम | पत्रं १३१ १३३ १३५ | \$ 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 | पंक्तिः ६ ६ २ | त्वम् • • • • • यन्थ समाप्तिः • • | पत्रं १३५ १४० | पृष्ठं २ १ | पंक्तिः ५ २ | 米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米 | ্ব |
|---|--|-----------------------|---------------------------------------|---|----------------------------|--|------------------|-----------------------------------|---------------------|------------------|-------------------|---|-----------|
| | ************************************** | | इ | त्यनुक्रमा = | णेका — | स्र | म्पूर | र्पो. | | | | *********** | แรแ |

पं **************

For Private and Personal Use Only

सिंहोयःपितृदत्तमहीश्वरः॥ ७॥ क्रियाकलापैर्ज्जमद्ग्नितुल् र्गीशिवंश्रीहरिं स्वाभीष्टांपरदेवतांच शुभदांनताप्रजान ग्रंथास्तुमहामहोपाध्यायश्रीदत्तकृतछन्दो हामहोपाध्यायहरिनाथकृतस्मृतिसार महामहोपाध्यायविश्वेश्वरकृतस्मृतिसमुच्च पू. पं.

महामहोपाध्यायशंकरमिश्रकृतछन्दोगाह्निक महामहोपाध्यायवाचस् चिन्तामणि महामहोपाध्यायपक्षधरमिश्रकृततत्वनिर्णयमहामहोपाध्यायदे महामहोपाध्यायगणेश्वरमिश्रकृतहरिभक्तिदी *********** महामह श्रकृतकृत्यप्रदीप महामहोपाध्यायवामदेवकृतरुगृतिदीपिक। ******* |याज्ञवल्क्य**स्मृतिटीकापरार्क** ान्हिकतत्व गोपालभद्दकृतहरिभक्तिविलास प्रभ्नृति गौडनिबद्धाः विज्ञानेश्वरकृत

भा,

प्र. १

5

李子子子子子子子 स्मृत्यालोक प्रभृति दाक्षिणात्यनिबद्धाःविस्तरभियातत्रतत्रोक्तप्र **华米米米米米米** जनेनाधिकारः॥ स्वधर्मयःपरित्यज्यपरधर्मरुचिर्भवेत्॥तेनाहंपूज्य

米米米米米米米米米米米米米米米米米

. પં. રૂ

विवाक्यादितिवाचस्पतिमिश्रप्रभ्रतयः इत्याह तन्मतेक्षत्रियवैश्ययोःस्वधर्मत्यागिनोरधिकार ***** वसायापत्तिर्होषइतिबोध्यम् दाक्षिणात्यास्तु ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रश्चप्रथिवीप ****

भा.

For Private and Personal Use Only

** ***

पू. पं *********

光米 李米米米米米米米 र्यःपूजातुकार्यैवेतिबहवः आचारोपितथैवे *************** रसंस्पर्शोवजस्पर्शाधिकोमतः मोहा**च्चे**त्संस्परशेच्छुँद्र

भा.

प्रिश

o

*

************* स्पिर्शसिहतोपिपञ्चोपचारादिभिर्विष्णुपूजनेधिकारएव गोडमते स्त्रीशूद्रानुपनीता

जानित्या कोशिकीदुर्गा मनसाप्यनर्चयन्नित्यत्र्थः तेनपूजात्रशस्तपुष्प

米米米米米米米

पं

भिधानाच्च वरन्देहपरित्यागोवरन्नरकस जावेदाभ्यासःसरित्स्ववः नाशयत्याशुपापानिमहापातकजान्यपाति याज्ञवल्क्यवच *****

*

松松 米米

米米米米米米米米米米

9 ******

ायथाहरिः नविष्ण्वाराधनात<u>्प</u>ुण्यं

पू. पं. *****************

तिरुम्रतिदीपिकाकृद्वामदेवोपाध्यायः। 米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米 पाणिः पार्थिवशिवलिङ्गपूजाकाम्येव दाक्षिणात्यास्तु प्येकामभिमतान्देवतामर्ज्ञयेत् तत्रापिहरिहरयोःपूजाप्रशस्तेत्याहुरिति पङ्कजभास्करेनित्यकाम्यदेवपूजाविचारोनामहितीयःत्रकाशः॥२॥ अथ सच चतुर्थेसिव्वॅभागेतुस्नानार्थम्मदमाहरेत्

*

पू. पं

भा.

प्र. ३

\ पू. पं 90

[महःकृत्यन्दर्शयाते नतुपूठ्वोण्हमध्या भ्यः इतिगौतमोप्यन्हःपूर्व्वम रहःपञ्चयज्ञान्निर्व्वपेदितिशङ्खिरिक्ते अहरेवाधिकारविशेषणम् तद्न्तरगेतमध्यान्हा गोडास्तु पूर्वाण्हेदेवतार्ज्ञनम्मुरूयम् पूर्वाण्हएवकुवीतदेवतानाञ्चपूजनाम

भा

ا۲.

90

अपिनित्यतयाविधयेएवेतिरमृतिकौमुदी श्रीदत्तो ादकालानयमस्तुदृष्टाथएवत्याह पूर्वाण्होमध्याह्नश्चाहर्भागं प्रातहींमोत्तरञ्चतुर्थ**भ** ******** व्वादेवपूजाविधेयेत्याहुरिति इतिपूजापङ्कजभास्करेनि

भा.

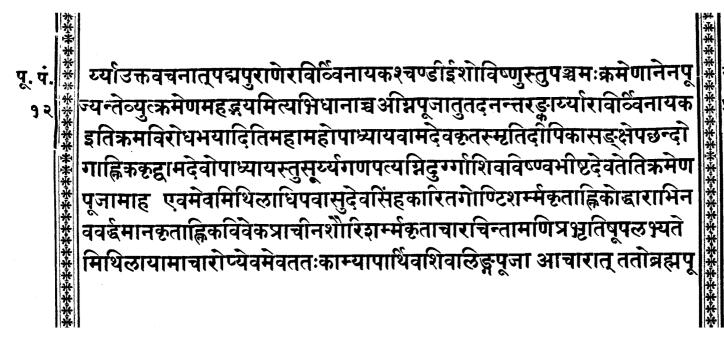
प्र.३

99

31 亦 3/2 亦 Me 370

यावन्नदीयतेभानोरित्यादिवचनात् ान्तद्वताइात र्मसिद्धिदायकवेन आदित्यङ्गणन **** द्वताामष्टद्वताम्अन्तचष्टद्वता सिकलपूजानिबन्धकारः मध्येदुर्गाशिवविष्णूनाङ्कमे ****

92



米米米米米米米 ****** ****** 米米米米米米米米米 क्तमगोर्थ्यादिपूजनपरामितिकल्पतरुप्र**भृतिभिरपिसूर्थ्यपूजनस्या** **** एव

OTT

प्र.४

9 3

हिंसुवर्णादितत्समूहमयी रीतिकाधातुयुक्ता रीतिकाधातुःपित्तलस्तद्युक्ता

भा.

प्र. .४

38

米米米米米米米米

小

कांस्यतास्रमयी कांस्यतास्रोभयमयी शुभदारुमयी यज्ञियदारुमयी वीत्रतिमाग्रहेउपविष्ठानधार्या देवीपुराणे भियकरीमता इत्यभिधानात् *****

रू. पं. १५

ावरुद्धा न्यथाव्यथतास्यात् अतएवपूजाप्रकरणेएवेदव्वॅचनंलिखितम् तत्रभूमौजलेआका

भा. प्र.५

a **u**

अग्नीहोमरूपापि युक्तस्यात्मनीति योगिनाब्बाँह्योपचाराभाव

पू. पं • ९ ६

सामान्येनाधारविधिः शिवपुजायामप्यविरूद्धः अतुप्वआकाशस्टिङ्गमित्याहुः ए निदेवताःइति आत्मनीति योगिनोबाह्योपचारां त्याहुः दाक्षिणात्यास्तुभागवते शैळी दारुमयी छै।ही छेप्या छेरूयाच सैकती मनो

भा,

प्र.५

20

मयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधारमृता तत्रेवकालकामुद्य ।चिन्नरः कुर्वीताङ्गुष्ठतो[ु]हस्वन्नकद। 米米米米米米米米米米 तुसंभवाश्रेयइछतेतिचाहुः तथाचायम्प्रकरणार्थः प्रतिमायांसर्वदेवतापूजाप्रशस्ता 米米米米米

<u>አ</u>********* एवम्भूमौजलेआकाशेचाभावेनदेवतामारोप्यगन्धादिन

भा.

प्र.५

...

米米米米米米米米 ************* * 米 淅 が * इतिपूजापङ्कजभास्कर **** A. * 亦 M. Me A. 不

पं

******** *****

भा.

प्र.६

9/

₩ 7 米 ||*|



पू.पं.

ामाण्याभिधानमनवबोधात्

भा.

त्र.६

AT.

__

स्तुप्रणवस्थानेनमःशब्दएवोच्चारणीयइति अथोपचारपात्राणि तानिचदारुम् अर्घस्नाननेवेद्यबलिधुपादिकार्य्ये यद्यपिदारवेणातुपात्रण इत्यर्घप्रकरणस्थरमृतिसारधृतवचनेऽ **** ाू. पं. २० **

पिदमस्ति तथापिस्नाननैवेद्यादेरपिउपलक्षकन्तत् अन्यथास्नाननैवेद्यादिदाने त्रानध्यवसायापत्तिःस्यादितितदाशयः विष्णोःस्नानीयदानेतुशङ्खःप्रशस्तः श तिनतीयेनयःस्नापयतिकेशवम् कपिलानांसहस्त्रस्यदत्तस्यफलमाप्नुयात् गांडास्तु नदद्याद्रास्करायाघशङ्खतायाच्वच र्घ्यंपिशङ्खन्निषेधयन्ति स्नानेतुसीवर्णराजतकुम्भाभावेतास्रकु भा. प्र ७

30

米米米米米 ***** भानिरत्नादिरवचितानि काञ्चीघनयुतानि नानाविचित्ररूपारि भय्यँथालाभ क्रूल्पनीयानितेषुचारोहपरिणाहाभ्यांषट्त्रिंशदङ्गुलिपरिमितान्युत्त *****

T * 水 * * 米米米米 **

米米米

*

भा

प्र.ए

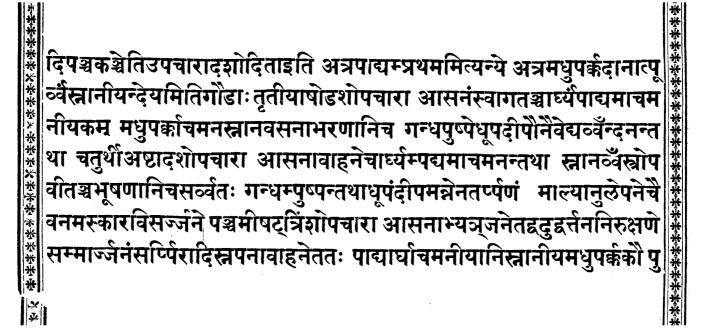
******** उत्तरोत्तरम्त्रशस्तानि विष्णोःस्नानीयदानेशङ्खः प्रशस्त विचित्ररूपाणियथाशोभय्यँथाळाभङ्ख्पनीयानि तानिचारोहपरि 水米米米米水水

छिपरिमितान्युत्तमानिचतुर्विंशत्यङ् रिंगाणनियमाभावएवेति इतिपृजापङ्व मःप्रकाशः ७ अथोपचारविचारः तत्रहारीतः सपर्य्याविविधात्रोक्तातासामेकांस निवेद्यान्तापृजापञ्चोपचारिकेति कालिका दि(पोनेवेद्यमेवच पितामहोप्याह गन्धादिकान्निवेद्यान्ताम्परिचर्याम्प्रक ****** ल्पयेदिति इयमेकाअपरादशोपचारा अर्घपाद्याचमनीयमधुपर्काचमनानिच गन्धा

भा.

प्र.८

२२



पू. पं

वस्त्रयज्ञोपवीतके अलङ्कारोगन्धपुष्पेधूपदी 不米米米米米米米米米米米米 ******

भा.

2.3

妆 松松松 प्यर्थिभिन्नक्रमः पूष्पमात्रेणप्रीत्यर्थइत्यधिकमाहुः अत्रचषोडशोपचारपंची 米米米米米米 亦 7 汝 亦 *

पू. पं.

ोयद्रव्याणिविविच्यन्ते तत्रासनम् कुश न्दिनोद्भवम् वाल्कलम् कोशजम् फालम् फलिर्नितम् रो रत्नमयम् मणिमयव्वायथालाभङ्याह्यम् ******

H

प्र.८

5.5

*************** ****

षू.पं.

२५

निसव्वॉप्रकल्पयेत् इत्यर्घप्रकरणेदेवीपुर विद्वत्विविवक्षितम् अत्रगोडिनिबन्धे इदमर्घ्यमितिछन्दो त्यन्येषामित्याह आचमनीयंशुद्धजलंआगमेतुगंध **** · 米米米米

भा.

J.C

212

षामधिकङ्क्षीद्रम्मधुपर्केत्रयोजयेत् इतिका ार्क्कञ्चतत्रहीति स्नानन्त**ञ्चस्नानीयद्र**ञ्येर्यु * * वस्नानेघृतादि अष्टोत्तरशतपछपरिमितं महास्नानेसहस्रद्वयपछपरिमितन्देयम् दे * **

પૂ. પં. રદ્દ

पलानितस्यदेयानिश्रद्यापञ्चविंशतिः निदेयञ्चसर्वदा द्वेसहस्रेपलानाञ्चमहास्नानेच ***** ****** इतिकालिकापुराणेभिधानात्

* 亦 *

****** दिब्राह्मणे भ्योदातव्यम् शिवस्याग्नी अन्यदेवानान्दीने भयोदातव्यम् ब्र

षू. पं २७

सर्वतःस्ववदाहरेत् इतियाज्ञवल्क्यात् देवतार्थन्तुकुसुममस्तेयम्मनुरब्रवीा

ामवचनाच्चविशेषोज्ञेयइत्याहुः विशेषतस्तु जाती शमीकुडा क कुश करवीर नागपुत्राग मिल्लका अशोक चम्पक रक्तोत्पल नीलोत्पल बकुलप पुष्पाणि सर्व्वदेवानाव्विहितानि स्वयमुत्पादित किफलम् य्रियतम्मालारूपेण गुच्छरूपेणवा उयगंन्धीनिविशेषविहितभिन्निन न्धीनि सकेश सकीट कीटविद्ध स्वयम्पतित स्वयमविकसितो पहत शीर्ण शु ष्काधावस्त्रधृत मस्तकोपरिघृत वामहस्तधृत शूद्रानीताऽविकसितानि कृताहःस्ना

भा.

प्र.८

२८

र्षिस्वयन्त्रोटितानि याचितानिसच्छिद्राणिचनि निषिद्धानीतिचिन्तामणिः किलकापिसर्वेषान्निषिद्धा यावच्चपुष्पन्निम्मील्यतान्नयातितावदेवदेवताङ्गेः -**

२९

जात्याप्रहरेणकरवीरस्याहोरात्रेण इतरपुष्पाणाङ्गन्धा किरवीरमहर्न्निशमित्यादिश्रवणात् शारदायाम् सिळलम्भ ाळाबकुळम्वना गोडास्तु योगिनीतन्त्रे ****** ताशङ्कार्थ्यापञ्चिदनोध्यंतः इतिलिखन्ति निषिद्धान्यपिमालयादेयानि देवार्धिपत

भा.

प्र.८

9 C

********** ፞ म्भवानि कीटादृषितानि निश्छिद्राणि निष्केशानि अपर्घ्य षांन्देवानाव्विँहितानि बिल्वपत्राणि अत्रश्रीदत्तोपाध्यायाः पुष्पेररण्यसम्भूतैःपत्रेर्व्वागिरिसम्भवैरितिवाक्येपूजा 米米米米米米米

विकल्पश्रवणेपितत्तद्वचनकथितत्तत्फलार्थितयास र्घ्यथालाभम् एतेषाञ्चयथालाभैःपत्रेश्चेत्याद्यक्तेर्व्वासमुच्चयः इत्युक्तवन्तः पुष्पाद्य

भा.

प्र.८

. .

**** *** भूषण प्रातमादिषुयद्याग्यङ्गात्रेदातुञ्चतत्तनी दद्यादयोग्यम्पु 米米米米 小

ाघ्रातादेवेभ्योनदेयाः कालिकापुराणे

भा.

प्र.८

39

米来来来来来来来来来来来来来来来来来来来来来来来来 दीपहर्त्ताभवेदन्धःकाणोनिर्वापकोभवेदितिकालिकापुराणाञ्च

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

** सर्व्वसहावसुमतीसहतेनिबदंद्रयम् तत्रजलमध्येइत्यंशः क्वथितपदार्थेविवक्षितः यत्नपक्वमपित्यजेदित्यन्यत्रदर्शनात् त ***** *****

व्यञ्जनस्याग्निपकतानियमात्ताङ्गित्रतयाग्निपकस्यका ानकदालपनसपटोलादेव्यंञ्जनरूपस्यननिषे**धः** ** *

* ** 33 ***** 米米米平

यानामुद्धरणस्याथेलभ्यतात् वस्तुतः ज्ञो विष्णुःशूद्रस्यचनैवेद्यम् वैश्वदेवश्चामान्नेनैवआमंशूद्रस्यपकान्नम्पकमु,च्छप्टमु ******

ास्त्वथतद्देयम्ब्रह्मणेयन्निवेदितम् स्त्रीभ्योथदेयम ******* विदितमित्युपसंहारात् नैवेद्यप्रतिपादनस्याप्यभि

भा.

प्र.८

38

ाम् स्तुतिःत्रणामश्च रम्हतिदीपिकाकारास्तु छिपनम् तदेवचाष्टादशोपचरिनुपछेपनपदार्थः गन्धःसुरभिद्रव्येणतिसकरू पः सचगन्धपदेनोल्लिरूयेवदेयः अनुलेपनपदेनदानविशेषादर्शनमूलकम् अतएवै षगन्धः शिवायनमः इत्येवत्रयोगल्छिंखन्तिशिष्टाः गन्धानन्तरमक्षतदानेमानन्तु क्षितकरणकबदर्शनमितिवामदेवोपाध्यायाआहुः तदयम्प्र करणार्थः पुजाविविधातत्रगन्धपुष्पधपदीपनैवेद्येतिपञ्चोपचाराःएका नीयमधुपक्कीचमनीयगन्धादिपञ्चके तिदशोपचाराद्वितीया 水米米米米

34

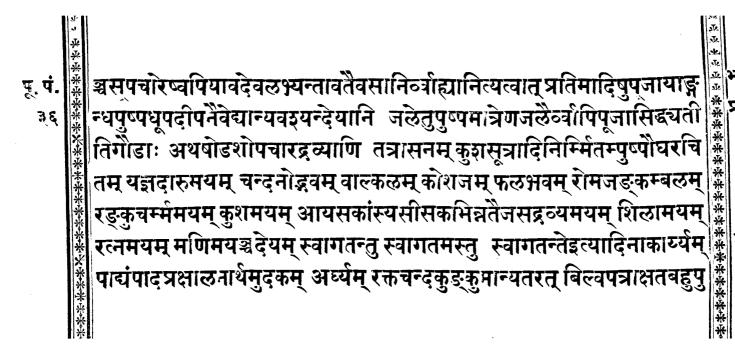
ाञ्चक वन्दनेतिषोडशोपचारातृतीया स्मृतिदिपिका ****** ।रगन्धादिचतुष्टय ताम्बूळनैवेद्य पुष्पमालानुलेपन शय्या चामर व्यज

भा.

प्र.८

au

नमस्कारनर्तन गीत वाद्यदान स्तुतिहोम प्रदक्षिणादन्तकाष्ठदानदेव एतेचोपचाराउत्तरोत्तराधिकफलाः तत्राद्ययो तत्रापित्रथमः करपोनियतः नित्यायान्तुपूजाय **治米米米米米**



×××* जलेनक्षालनङ्कत्तर्वं दुग्धादिस्नानानन्तरमपिजलक्षालनङ्कर्तव्यम् ततोब्रह्मणोवि *** *** * ***

ब्राह्मणेश्योदातव्यं शिवस्याप्ती अन्यदेवानान्देर्व न्निं गोडमते पद्दवस्त्रन्नीलं रक्तऋदेयं उपवीतं सुवाटिकासम्भवानि स्वामिनावाटिकारक्षकेणवास्वेच्छयादत्तपरवाटि

भा.

प्र.८

210

水米米米水 *****

न्यतोबिहितानि विशेषतस्तु जाती शमी कुज्जक कुश करवी ष्काधोवस्त्रधृत नीली कपित्थाद्यपवित्राणि अन्तर्जलक्षालित पर्य्युषिताकालभव 来来父亲来 *******

मस्तकोपरिधृत वामहस्तधृत शूद्रानीतानि कृताहःस्नानेनपूजाकर्त्रा चितानिसच्छिद्राणिच निषिद्धानि अश् प्रवादएव शिष्टेरनादृतलादिति तुलस्यां iषोनेत्यपिप्रवादएवेतिचश्रीदत्तोपाध्यायाः**पर्य्यु**षितेष्वि ****** ग्रहस्थितेषुनदोषइतिशैवागमः यावच्चपुष्पंनिर्माल्यतान्नयाति तावदेवदेवताङ्गेश्यउ

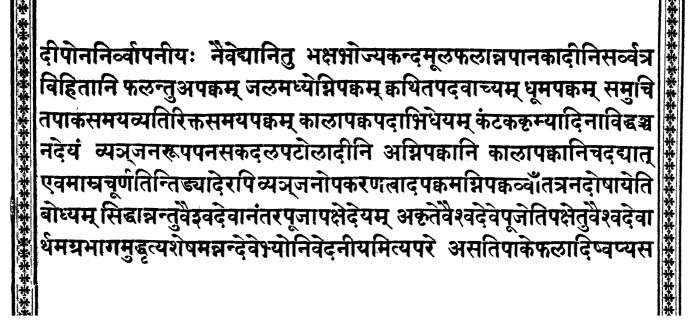
ोयं निर्माल्यतातुजात्याः प्रहरेण करवीरस्याहोरात्रेण इत निश्छिद्राणि निष्केशानि अपर्य्युषितानि अनुपहतानि सामान्यतोविहिर्ता **

कार्य्येतिशूलपाणिः दीपन्तुदेवतादक्षिणेपुरतोवादद्यान्नवा

भा.

य. ८

20



पू. पं

किमन्नत्रेवदेयम् मांसन्तुशिवेतर बतभ्याब्राह्मणभ्यावाद्द्यात् इत वितिप्येवमाचारःइतिविशेषः सर्व्वत्रनैवेद्यदानानन् दनम् स्तुतिः प्रणामश्च स्मृतिदीपिकाकारमतेतु

भा.

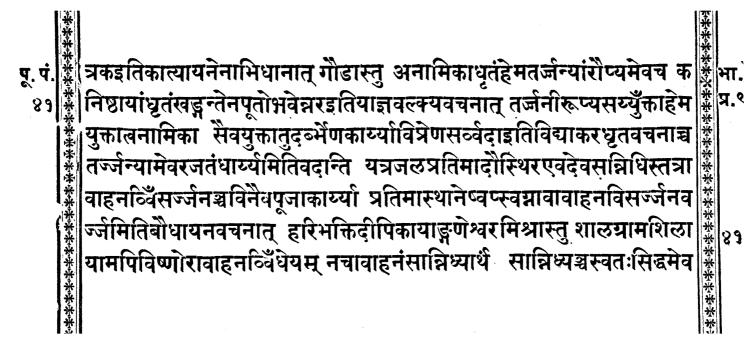
प्र.८

0 .

米米米

李米米米米米米米米米

₹ * मिकायाम् अनामकायान्तद्धाय्यन्द कल्पतरुत्रभ्रतयः एवम्पवित्रधारणमपितत्रैव सव्यःसोपग्रहःकार्य्योदक्षिणःसपवि **李米米米** ****



米米米米

ात्रतत्रसन्निहितोहरिरितिवचना**त् दत्वेपिबोद्दसान्निध्यार्थन्तदाचरणमितितुनवाच्यम्** पिसोमक्रेतव्यइत्यधिकारणसिद्धान्तः आरुण्यादिगु 米米米米米米米米米米米 ष्टगाक्रातसामस्यवीद्दष्टजनकर्वानयमात्देवतासम्मुखीकरणार्थमावाहनमित्याग पू. पं.

उद्यासावाहनेनस्तःस्थिरायामु द्वयमितिविशेषउक्तः द्वयम् उद्वास 米米米米米米米米米

भः

.

01

रू. पं. ४३

'भा.

प्र.९

म्प्रोक्तत्र्यञ्चतावोक्षणंस्मृतम् इतिस्मृतेः यत्प्रक्षालनयोग्यन्तन्निः प्रक्षालनायम् ।त्र सकृत्पितृभ्यः इतिगोभिलीयात् 米米米 举举

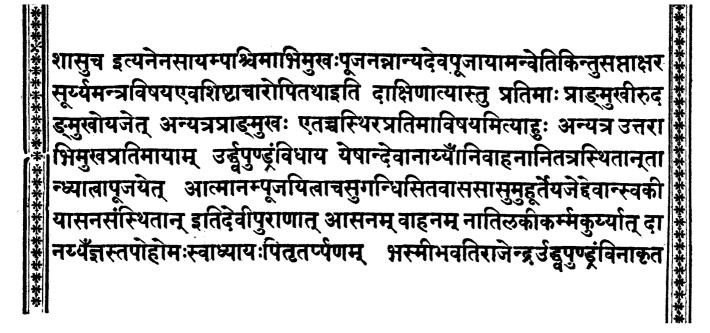
रू.पं. ४४

सिद्धम् गोडनिबन्धेतु *****

भा.

प्र.९

oo



पू. पं

तेहरिभक्तिदीपिका स्नानीयादिदानकाले घण्टावादनीया ष्वानभिजायते प्रेक्षणीयम् चृत्यम् गीतादेद्दीनन्देवस लिपाण्याद्यः अत्रेदम्बोध्यम् यद्यपि एकपाकेनवसतांपितृदेवद्विजार्चनम् कम्भवेद्विभक्तानान्तदेवस्याद्ग्रहेग्रहे इतिवचनादिवभक्तानाङ्गनीयसान्देवपूजानि

भा.

प्र.९

ંપ

॥निरञ्जनं ततोवलोकयेदक्केंहंसःशुचिषादत्य कायाम्पवित्रञ्चधारयेत् गोडास्तुदक्षिणहस्तानामिकायांसुवर्णतर्ज्जन्यांरजतंकिन 米米米米

स्पतिमिश्रादयः एतेचोपचारादक्षिणहस्तस्थदेवतीर्थेनैवदेयाः

For Private and Personal Use Only

स्थिरत्रतिमापूजनन्तुत्रतिमाभिमुखःसन्नेवकुर्यात्

भा.

प्र.९

019

米米米米 米米米 米米米米 तन्मनाःसुमनादाक्ष ***** *

पू. प.

च्छेतिपदानन्तरंसम्बोधनान्तेनदेवतानाम्नासम्बोधनान्तदेवतानामोत्तरमागच्छेति पदेनवादेवतामावाह्यस्थापयिलाप्रतिष्ठितप्रतिमाशालग्रामनाम्मदेलिङ्गादावावाह निव्वनेवदक्षिणकरस्थदेवतीर्थेनआसनपाद्यार्घाचमनीयानिदलास्नपयित्वा यथा लाभँव्वस्त्रालङ्कारयज्ञोपवीतादीनिदला गन्धपुष्पधूपदीपनेवेद्यानिचदलादीक्षितो जस्वाऽदीक्षितस्तुजपमकृतेवप्रदक्षिणीकृत्यप्रणम्यस्तुला ध्याला भगवन् भगव तिवाक्षमस्वस्वस्थानङ्केतिविसर्जयेत प्रदक्षिणन्तुएकञ्चड्यांरवीसप्तत्रीणिद

भा.

प्र.१

(米米米米米米米米

इत्यभिहितम् विष्णोस्तुनरसिंहपुराणीयन्ध्यानङ्ग्राह्यम् तत्राप्यासनआसीनोनोत्थितस्तुस ांवेदपारगे एकाहमर्चयेद्रानुन्तस्यपुण्यन्ततोधिकम् तथा न्नित्यम्प्रणमेद्वापिभक्तितः तस्यभोगञ्चमोक्षञ्चन्नप्रस्तुष्टःप्रयच्छति तथा यजेदेकंस

भा.

*

प्र.११

**

हस्रांशुम्मोक्षकामोनसंशयः तथा मेरुमन्दरतुल्योपिराशिःपापस्यकर्मणः आसा मुकुटयुतपद्मगब्भसमप्रभम्



तत्क्षणात् इत्यादिभविष्यपुरी श्वकचक्ररथस्थम् नानाभरण जः सव्हॅतचरणद्वयम् विचित्र **मुलोचनंपार्श्वद्वयस्थितखडुहस्तदण्डा**

40

पार्श्वस्थितकृतलेखनीहरूतधातारं नानादेवगणात्रतं पद्मपत्रसन्निभारुण ओंबण्महाक्ष्असिस्र्यंबडादित्यमहाक्ष्असि महस्तेसतोमहिमापनि ष्टममह्नादेवमहाक्ष्असि अनेनमन्त्रेण यजुर्व्वेदिना ओंआकृष्णेनरजसावर्तमानी हिरण्ययेनस्वितारथेनादेवोयातिभुवनानि न्त्रेणकार्थ्या अस्यार्घेभविष्यपुराणम् योष्टाङ्गमर्घमापूर्घ्यभाने 米米米米米米米 विर्षसहस्त्राणिवसेदर्कस्यमंन्दिरे आपःक्षीरङ्कुशाय्राणिघृतन्दिधितथामधुरक्तानि ****

भा.

प्र.११

'कुज्जक कुरण्टक कुश कुशेशय केशर कैरव चम्पक जया जाती जवा

तगर तिरीटक त्रिसन्ध्या तिलक द्रोण नवमल्लिका नागकेशर नीलोत्पल पद्म पा टला यावन्तिक पीताम्नान पुन्नाग बाण बहती मन्दार मल्लिका मालती मुकुर यूथी ोकन रक्तोत्पल लोध वक बंकुल बर्ब्बरमल्लिका वासन्ती विचकिल वोडक शमी शतपत्रिका शतपत्र शाल्मली इवेतमन्दार इवेतपद्म सिंहास्यानि विहितनिषिद्धन्तु पिण्डीतगरम् गौडनिबन्धे दमनक द्रोण मन्दार शिंशपा पुष्पाणि निषिद्धान्युका नि निषिद्धानितु अपराजिता आम्रातक उन्मत्त काञ्ची कृष्णला कुसुम्भ वनतगरी पुष्पाणि पत्रेषु कालनुलसी केतकी तमाल नुलसी दूर्व्वा भ्रङ्गराज विल्व शमी शत

भा.

77 99

पीत्यर्थः ओषधीरपीत्यपिना तण्डुलजलानीतिशूलपाणिः तथाप्रत्येकमुक्त

कः अस्यदीपेघृतम् तद्भावेतेेलं तञ्चद्वाननिर्व्वापयेदित्यादिसामान्यप्रकरणोक्तम

मा.

प्र.११

त्रानुसन्धेयम् नैवेद्यानितु सय्यावकसरापूपं पायस गुडसय्युँकमोदक रसाला शा रस्थषष्टिकौदन यव गोधुम तिल मुद्ग माष मांस पक्कफलपानकादीनि अर्द्धाढकं सचिरपर्ध्यषितस्यदधः डशपलानि शशिप्रभस्य सर्धिःपलं मधुपलं मरिचिद्रकर्षे शुंठ्याः पलार्द्रमपि स्त्रियमन्योपिरकोपहारइतिछन्दोगाह्निकम् अस्यनैवेद्यम्मग्रेश्योदेयम्

धौशङ्खोनवादनीयः शिवागारेभल्लकञ्चसूर्य्यागारेचशङ्खकम् दुर्गागारेवंशवा

*** ₩ ल्यप्रक्षेपणमुक्तं अथायमत्रप्रयोगः अक्षतान्गृहीला यथोक्तन्ध्र्यायन् *

इहागच्छेत्यावाह्य इहतिष्ठेतिजलादौ ञ्चाय्यताद्वनावा इदम्मारयम् एताान ान्यमुकपत्राणि एषधूपः एषदीपः इदंनेवेद्यमितिक्रमेण मनीय रनानीय पुनराचमनीयानि गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यानिचपृ अथवा आवाह्य इहतिष्ठे त्युक्ताधारेस्थापयित्वा एतानिपाद्यार्घाचमनी

प्र.१

For Private and Personal Use Only

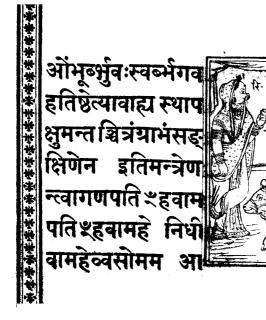
ま、 マ・ ・サ・マ・ ・サ・マ・ ・サ・マ・

ऋदिवुदिभ्याय्युक्तम् मूषकवाहनम् गणपतिंध्यालाऽक्षतमादाय ****

भा. प्र.१२

५५

For Private and Personal Use Only



न् गणपते इहागच्छ यिता ओंआतृनइन्द्र महाहस्तोद सामवेदी ओंगणाना हे त्रियाणान्लाप्त्रिय नान्त्वानिधिपति दह हमया निगर्भधमात

सिगर्ब्भधम् इतिमन्त्रेणयजुर्व्वेदी ओंगणपतयेनमः इतिसामान्यप्रकरणोक्त पितिपूजाकथनंत्रामद्वादशः प्रकाशः १२ ओं अग्निन्दू तव्हेँ णीमहेहोतारं व्विश्ववेदसम्

भा.

प्र.१३

For Private and Personal Use Only

इतिमन्त्रेणसामवेदी र्जनान्तैः पूजयेत् अ इतिपुजा कथनन्नाम त्रयादश



वा ७ आसाद्यादिह ओंअग्नयेनम इतिसा विस स्यापित्रिः प्रदक्षिण प्रकाशः १३

त्रिलोचना ऊर्द्वाघःक्रमेण दक्षिणेब्बाहुभिः त्रिशूल खङ्ग चक्र तीक्ष्णबाण

भा.

प्र.93

अधस्ताहिशिर नागपाशव



मेण वामेर्बाह्मभः खे घण्टापरश्वन्यतर स्कम हिषशिर ऋछेदी क्तीकृताङ्ग रक्तविस्फा ष्टित भ्रुकुटी भीषणा हद्य वामहस्त

परिधृतदक्षिणपादाइति अस्याः तीयतोनिदहातिवेदः सनः पर्षदतिदुर्गाणि इति ओंइभँस्तोममईतेज म्बालिकेनमानयतिकश्चन ससस्त्यश्वकः सुभाद्र ' अस्याअर्घः आपःक्षीरङ्कुशायाणि अक्षताद्धितण्डुलाः कुङ्कुमोरोचनामधु अघीयङ्कुरुशाईू छद्रादश

भा.

प्र.१४

**** ायवाइतिनिबन्धकारः सहा सहदेवानामओषधी गन्धास्तु अर्ज्ज़न अशोक उत्पल कदम्ब करवीर कि जवा तगर तिरीटक दमनक द्रोणा धान 'ब्बन्धूक बहती भद्रा मन्दार मरुबक मछिका माधवी र्थी रक्तपङ्कुज रक्तोत्पल लोघ्र बक बकुल बर्वरी विचकिल शमी शतपत्रिका ****

सिंदुवार सर्वीषधी सुरभी रूपाणि विहितानि अत्रनिषिद्धानिनसन्ति ब्रह्मचक्षलता ब्रह्मचक्षः पलाशस्तस्यलतामाधव्यादिः विहितपुष्पपत्राभा

भा.

प्र.११

For Private and Personal Use Only

*

**



भिस्तदभावेजलेन तदलाभे मानसीपूजाकाय्य सासतीम् सम्प्रसारितहस्तोयोदण्डवत्प्र ण्डिकापुरतोवीरसयातिपरमाङ्गतिम् सतीम् दुर्गाम् छिलाभित्वाचभूतानिहलास पु.पं. ६०

र्व्वमिद्वज्जगत प्रणम्याशिरसादेवीं सर्व्वपापैः प्रमुच्यते पूजाप्रयोगस्तु अक्षतान्यः हीतायथोक्तरूपान्दुर्गान्ध्यायन् ओंभूब्भुवः स्वब्भगवति दुर्गोइहागच्छेत्यावाह्ये हितिष्ठेति स्थापियत्वा ओंदुर्गायैनमइति पाद्यादीनिद्त्वा ओंभगवतिदुर्गेपूजि तासिप्रसीद क्षमस्वेतिप्रसाद्यस्वस्थानङ्गच्छेतिविसर्ज्ञयेदिति इतिपूजापङ्कजभा स्करेदुर्गापूजनकथनन्नामचतुद्र्शः प्रकाशः १४ अथिशवपूजा साचप्रतिमाद्यपे स्वराद्यक्तित्वास्याद्याः अर्ज्ञास्याद्यक्तिस्याद्याः स्वराद्यक्तिस्यक्तिस्यक्तिस्यक्तिस्याद्यक्तिस्

मेतन्नसंशयः नतुष्याम्यिज्ञतोभक्तयातथादेविनगात्मजे छिङ्गेर्श्चितोयथा

पा.

.

***** ***

न्यद्वापिहिलिङ्गवत् कृत्वापूजयित्रेन्द्रलप्स्यसेचेप्सितम्फलं वार्क्षम् यिज्ञयवृक्षभ वं कृत्यप्रदीपे सोवर्णरत्नचिटतव्वाशिविलिङ्गसकृतत्पूजयतः शिवलोकमहितत्वम्फ लिमित्युक्तं पिण्डिकालक्षणमुक्कालिङ्गपुराणेच एवंरत्नमयङ्कुर्धात्स्फाटिकम्पाधि वन्तथा शुभदारुमयव्वापियद्वामनिसरोचते इत्यभिधानाच्च अन्यत् शैलान्तरजम् लिङ्गवत् लिङ्गाकारं अत्रच लिङ्गङ्गकेशमितिक्षुद्रमितिस्थूलम् चिपिटाकारम् पिण्डि

भा. प्र.१५

**

**** प्तिमात्रमपेक्षितन्नतुमानोन्मानादिकम् तदुक्तंम् श्रलपाणौ म दिहानिरपिनदोषाय तदुक्तं मययन्थे प्रथमपटलेशिवप प्रकृत्यात्मनोरेक्यादेकद्रव्यजे**त्युक्तं** 父亲本本本本 * *

ध्वन्यलक्षितमितिअन्यथालक्षितमपिसाधु सकृदव ******** पञ्चवऋपक्षेत्रधानव्वक्त्रम्त्राग्व्य

भा.

प्र.१५

*********** 松 妆 अधृष्यःसव्वेभूतानारुद्रविद्वेचरेद्गुवि 米米米

नोपिरुद्राक्षन्धारयेतुयः सर्व्वपापविनिम्र्मुक्तःसया

班班班班班班

शः दीर्घायतले।चनः व्याघ्रचर्मपरीधानः काटिस्त्रत्रत्रयान्वितः हारकेयूरसम्पन्नःभु ण्डलद्वयालङ्कृतः आजानुल ****



रिणेति पात्रविचार प्रकरणिं आवोराजानमध्वरस्यरु

पुष्पाणिअपराजिता अपामार्ग अर्क अर्ज्जुन अशोक उदुम्बर उशीर क

HI.

7.9Y

राट कारिका कदम्ब करवीर कर्णिकार कल्हार काञ्चनाल काश किङ्किरात कुश कूष्माण्ड कुसुम्भ केशर कैरव गिरिमल्लिका चित्रक चूत जया जाती तगर तिल दमनक द्रोण धवल धुत्तर नागकेशर नी पछाश पाटला पुंनाग बाण बहती भ्रुङुराज मन्दार मोकन रक्तोत्पल वक वकहुल बकुल विचकिल विजय बिल्व शण शमी शाल्मली शिंशपा श्वेतपद्म श्वेतमन्दार सेवन्ती स्थलकमल इत्येतानिविहितानि भविष्ये कनकानिकदम्बानिरात्रोदेयानिशङ्करे दिवाशेषाणिपुष्पाणिदिवारात्रोचम *******

चैत्रशुक्कचतुर्दश्याविवाहितम् वैशाखारि त्मम् पाटलया १ पद्मैः २ बिल्वकल्हारैः३ नवमल्लिकया ४ कदम्बच ातीभ्याम् ६ शतपत्रिकया ७ नीलोत्पलैः८ कुन्नकैः ९ कुन्दैः धूक भण्टिका मञ्जिष्ठ मदन्तिका माधवी विभीतक यथिका ष श्वेतपाटला श्वेतापराजिता सर्ज्ज सिन्दुवाराणांपुष्पाणि र्षव्यापिशिवपूजायाम् कुन्दपुष्पम्माघे विहितमन्यथातुनिषिद्धम्माघेपि शुलपाणौ ***

米米米米 शिवशयनादारभ्य फाल्गुनान्तय्याँवदेव निषिद्धमित्युक्तम् पत्रा ।।मार्ग उदुम्बरविभोतक बिल्व शमीनाम् विहितानि विहिपुष्प भेन्येनापिनिषिद्ववर्जितेनपुजाकार्य्या तद्छाभे विहितपुष्परुक्षीयपत्रैःतेषामप्यला भे फलेन तदलाभे तणगुल्मोषधि तण्डुल जलेः तदलाभे मानसीपूजाकाय्य * ामावास्यायाव्विँहितः चिन्तामणोतु सघृतगु ****

妆 汝 * * 洲

米米米米米米米米

米米米米米米米米米米米

हितन्तेलिनिषिद्दम् नेवेद्यं मांसेतरं सामान्यप्रकरणे उक्तमेव विशेष किमहङ्रिष्ये इतिसंकल्पःकार्य्यइति अथनमस्कारः प्रणम्यदण्डवद्गुमौन

华光世米

रणयोर्श्वयेत् सयाङ्गतिमवान्नोतिनतव्क्रतुशतैरपि ********* न्त्रम् चार्यं तद्दिनावां ओंशिवायनम इतिपाद्यादिभिःपूजयिला पू. पं

भा. प्र.१५

火米米米米米米米米

शिवनारदसंवादे याह्यायाह्यविचारोत्रशिवलिङ्गे **米米米米米米米**

पू.पं.

शालग्रामद्यन्तथा द्वेचक्रद्वारकाय ****** ना नतेभूयोभिजायन्तेश्वेतद्वीपनिवासिनः निवासिनइत्यस्यभवन्तीतिशेषः भविष्य

भा

प्र.१६

सत्वयाकिन्नपूजितइति अनाश्रमिणाम्भगवत्पूजायान्नाधिकारः नरसिंहपुराणे ****

पू.पं.

धिक्रमः नतेषामपिबाधोस्तिशालयामिशलार्चनं अगम्यागमनेपापन्तथा

भा,

प्र.१६

चिःशालयामशिलानरः नहि ब्रह्मादयोदेवाः सङ्ख्याञ्जान इत्यादिशिववाक्याच्च गोडीयनिबन्धे पूजाधारमाह शालग्रामेमणौयन्त्रेस्थण्डिले पू. पं. ्७०

***** दोस्वभावतोदेवतासन्निधानात् कृतप्रतिष्ठासंस्कारकप्रतिमादीचसंस्कारेणदेवता

भा.

प्र.१६

*

************ ****** *

पू. पं. ७९ 不米米米水

亚米米米米

मोनारायणायेति ओंनमोभगवतेवासुदेवायेतिचद्विजातीनाम् अर्घेनरसिं सिद्धार्थकाः सितसर्षपाः सचार्घः सितसम्भवेश देवस्यतस्यश्रीः सर्व्वतोमुखीतिवचनात् दक्षिणावर्त्तशङ्खस्तु *****

For Private and Personal Use Only

米米米

米米

*

光米米米

*

7

光光光光光

米米

*

쌝

*

विनयोर्चयेद्धरिं सप्तजन्मकृतम्पापन्तत्क्षाण विद्याकरपद्धतोत्र ऱ्हादंत्रतिभगवद्वाक्यम् वाद्यानाम सिदाप्रियं किव्वादित्रसहस्रेस्त घण्टासुदशनसमान्वताम् ममाग्रेस्थापयेद्यस्तुतस्यदेहेवसाम्यहम् ममनामाङ्किता

पू.पं. ७२

****** थिपञ्चोपचाराःतत्रगन्धद्रव्याणिश्रीखण्डचन्दन अगु **张米米米米米**

भा. प्र.१६

ोर पद्मकाष्ठ कालेयक सिल्हकरक्तचन्द्रनानि अग्निपुराणे

松松地

भा.

७३

************** ७३

SE 34 **तुलासचदन** 乖 本本本本

For Private and Personal Use Only

*** ान्नाथन्तालरुंतेनवीजयेत् वायुलोकमवाप्नोतिपुरुषस्तेनकर्मणा इत्याभि ष्पाणितु अगस्त्य अतिमुक्त अपराजिता अपामार्ग्ग अशोक गोडनिबन्ध म्लान अवंती अष्टापद आम्नातक आम्त्रमञ्जरी सर्व्ववर्णोत्पल क जि तगर तिलक पीतश्वेतरक्ति संध्या तुलसी दमन द्रोण धा वक नन्दावर्त्त नवमालिका नागकेशर नीप नेपालिका पद्म पाटला पारिभद्र पीतक ã. á.

पू.पं.

पीतिका पुत्राग गोंडघृत हरिद्रा प्रसिद्ध पिङ्गक पुङ्गवी प्रसिद्ध पुरं धिपिंडिका माषर्टन्तक यूथी वक बकुल लवङ्ग प्रसिद्ध वनज तावरी शमी शाल शिरीषगोढनिबंधघृतच् श्वेतजवा शंश वाकसप्रसिद्ध सिंहास्य सेवंती सुवर्ण साेगंधिकान षिद्धानितु अर्क कण्टकारी गौडघृत करवीरप्रसिद्ध ऋकर काञ्चनाल कुटज केतकी कृष्णजयन्ती गिरिकर्णिका श्वेता पराजितात्रसिद्ध फिण्टी धुत्तूर मंदार बि ******

भा.

प्र.१६

भीतक शक्र शाल्मली गौडधृत शिरीष पुष्पाणि अशोक करवीर भ जलज त्रिसन्ध्या पलाश पाटलापारिभद्र शमीवर्जरोहित च केतकी नृसिंहेतरविष्णुमृतौंनि। र्गआमलकी कुश केतकी गौडघृतकुम मरुवक वक बिल्व शमी गोेडीय शेफाली सर्व्ववनस्पतीनाव्विँहित

森 ¥ पू.पं. 194 *** *** ****

हितः सितः कर्प्यूरः शङ्खं नखा

भा,

प्र.१

***** वाप्नातिकुलश्चेवसमुद्धरदितिकालिकापुराणात् पू. पं. ७६

पुरुत्यप्रदीपे फलेषु बदर खर्ज्जूर आमलकी प्राचीना धिूम शालि तिल मुद्गव्रीहि माष कुलित्थाः अन्यान्यपियज्ञि ****** ****

भा.

प्र१६

कृत्यप्रदीपः नाभक्ष्यन्नेवेद्यार्थेभक्ष्येष्वप्यजामहिषीक्षीरेइति वि *****

पू. पं. ७७

***** विद्वन्तर्थोषितम् उप्तकेशंविधृतञ्चर्लेष्मम्

भा.

प्र.१६

पू.पं. ७८

तेपञ्चकम् विहायअनादृत्यं कत्तिनात्पूर्णसञ्बेम्भवतीत्याहहारेः गानस्त त्रस्यगीतस्यवा गोडानिबन्धे ततश्चमूलमन्त्रणद्वापु न्मिहावाद्यजयस्वनैः प्रज्वालयत्तदथञ्चकत्पूरणघृतनवा

भा,

प्र.१६

कीर्तितम् इतिदर्शनात् ब्राह्मणसम्प्र येत् तेनैवस्थानमाप्नोतियत्रगतानशोचति धर्मवाणिजकामूढाःफल

पू. पं. ५९९ पनराचमनीयानि ओंविष्णवेनमः इदमनुलेपनिम

भा. प्र_{.१६}

米米米 ****** ***

इतिवा ओविष्णवेनमः एतेयवतिलाः ओविष्णवेनमः एतानि ानिइदन्नेवेद्यव्याँ ओंविष्णवेनमः इदमाचमनीयम् ओंवि पू.पं.

जाकायातत्रक्रमः भेषिच्यनरासंहपुराणाक सदासवितृमण्डलमध्यव **** नसान्नविष्टः



विधिनापुरुषसूकेनतत्र सिन्निधाप्याऽ र्तीनारायणःसरसिजास ककुण्डलवानिक रीटी हा भा.

त्र.१६

लङ्कनकाभव्वाँ इत्पुण्डरीकेर विमण्ड**लेवापद्मासनो**

पू.पं 米米米 **※** ※ *

तिदर्थः अत्रेदंबोध्यं हृत्पुण्डरीकंरविमण्डल *****

भा.

प्र.१६

नेवस्त्रचनेवंदद्यादाचमनीयकम् पण्मासात्सि ष्टिकन्नरः पत्र ******** अत्रचदिनेदिनेइत्यभिधानात्तदनुकल्प

ञ्चिनित्याधिकारइत्यवसीयते स्नानेइत्यादि षष्ठ्यास्नानानन्तरं सप्तम्यावस्त्र र्थिइतिबहवः अस्मिश्चकल्पेग्निपुर

प्र१६

For Private and Personal Use Only

ाचाग्निपुराणम् प्रथमार्व्विन्यसेद्वामेद्वितीयांदक्षिणेकरे तृतीयार्व्वामपादेत्

茶 **** पं ****

ओसहस्रश **,**बात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलं ओंभगवन्विष्णोइहागछ ऑएतावानस्यमहिमातोज्यायाश्च स्यामृतन्दिवि इदम्पाद्यं ३ ओंविष्णवेनमः ओंत्रिपादूर्द्वुउदैत **** भवत्पनः ततोविष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेअभि एषोर्घः ४

भा.

प्र.१

沙沙

水

**

*

पू.प <8

भा.

प्र.१६

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

米米兴

ष्मइध्भःशरद्वविः १४ इतिपठित्वाञ्जलिङ्कुर्यात् ओंसप्तास्यासन्परिध

पू. पं.

प्रिश्नानन्तरम् अष्टाक्षरेणमन्त्रेणनरसिंहमनामयं ******* *******

भा.

CY

*********** अत्रचकल्पेन्यासादिकन्नास्ति प्रमाणाभावात् किन्तुमूलमन्त्रेणेवावाहनास

पू.पं. ८६ ***** ममोक्षांश्चलभतेजपकुन्नरः इतिदर्शनाच्च तत्रेयञ्जपेतिकर्त्तव्यता अष्टाक्षरस्यमन्त्र

भा. प्र.१६

लाभः फलमितिशूलपाणिः अथनीराजमम् गौडानिबंधे ततश्चमूलमन्त्रेणद्वापुष्पा

भा.

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्र.१६

जानुभ्याञ्चेवपाणिभ्यांशिरसाचविचक्षणः

ाब्दानिविप्रेन्द्राः स्वर्ग**लोकेमहीयते इत्यादि** गौ मृगन्दियतयोप्सतमन्वधावद्वन्देमहापुरुषतेचरणारविन्दं २ एवय्युँगानुद्वतिभय।

भा.

प्र १६

गिदान्हरिरीश्वरः मनुजैरिज्यतेराजन् श्रेयसामीश्वरोहरिः स्तुताप्रसीदभगव विन्देतदण्डवत् तथा शिरोमत्पादयोःकृताबाद्वभ्याञ्चपरस्परम् ****

U

षुदाक्षितः इतिस्कान्दे अकालमृत्युहरणंसर्वव्याधिविनाशनम् ******** ाङ्केशवार्चाघृतन्तुयः अनिवेद्यनचाश्नातितस्यतुष्यतिके

भा.

प्र.१६

.0

7. T 7 ***** かなで

शवः इतिविष्णुधर्मेभिधानात् दाक्षिणात्यनिबन्धे एतन्निर्मात्यन्देवदत्तम्भाविय कापुराणे योयदेवार्चनरतः सतन्नैवेद्यभक्षकः ब्रह्मपुराणे अम्बरीपनवव्वस्त्रम्फलम पू.पं. ९०

水水

भा,

प्र.१६

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra

ाननिषेधकव्वाँ अर्व्वाक्विसर्जनाइव्यंसर्व्वनेवेद्यमुच्य सर्जितेजगन्नाथेनिर्माल्यम्भवतिक्षणात्इतिगरुडपुराणीयसंज्ञ क्तिंशान्तनुम्प्रति अतःपरन्तुनिम्मील्यंमालङ्घयमही पू. पं. ९१

९ अतिमलिनव्वाँसःपरिधाय नेनोपरुप्रश्यविष्णुरुपर्शनम् ११ विष्णोरपराधङ्कृत्वाविष्णे भा.

त्र.१६

******** ***

पू.पं. ९२

म् २६ परकीयेनाशुचिनादस्रेणपरिहितेनविष्णुकर्माचरणम् यतद्गोजनम् २८ गन्धपुष्पेअप्रदायधूपदान स्थानप्रवेशनम् ३० भेरीशब्देनविनाविष्णोः प्रबोधनम् ३१ अजीर्णेस नारसिंहे अतःप्रभृतिनिम्माल्यम्माळङ्घयमहीपते ****** अपराधसहस्राणिअपराधशतानिच पद्मेनैकेनदेवेशःक्षमतेहेल *****

भा.

प्र.१६

********** **********

* मिवदीक्षांग्रण्हन्तीति आगमोक्तेष्टदेवतासामान्यपूजापद्धतिः षू.पं. हितापिमहामहोपाध्यायगाविन्दठकु ोमुदी मन्त्रमहोद्धि कुशकाय्येकरंयस्मान्नतुवन्याःकुशाःकुशाः कुशेनरहितापूजाविफलाकथितामया ***

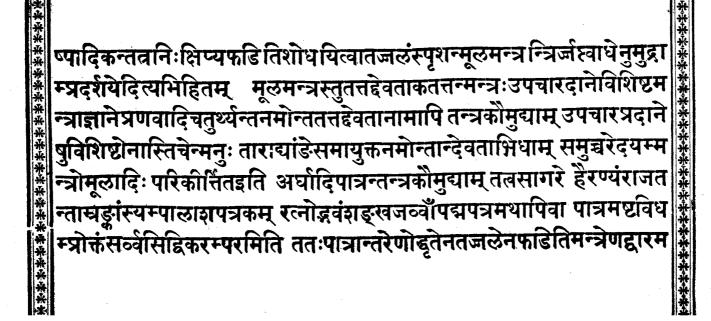
भा.

प्र.१८

**** इत्यभिधानात् ततआचामेत् तत्प्रकार ***** ****** म्प्रक्षाल्यसाधारमर्घपात्रन्तत्रनिधाय नमइतिपठन्जलेनापूर्य्यं तत्रओंगङ्गेचयमुने

भा. प्र १७

For Private and Personal Use Only



पू. पं *********

शायनमः १ दक्षे ओमहालक्ष्म्येनमः २ वामे ओसरस्वत्येनमः ३ पुनर्दक्षि ्अोंविष्नेशायनमः ४ ओंगङ्गायैनमः ओंयमुनायैनमः ामेक्षेत्रपा**ला** यनमः ओंगङ्गायेनमः ओंयमुनायेनमः पुनर्दक्षे ओंधात्रेनमः वामे ओंविधात्रेनमः निधयेनमः वामे ओंपद्मनिधयेनमः इतिपूजयित्वा ार्द्वारिश्रयंयजेत् ततोदक्षिणशाखायांविघ्नंक्षेत्रेशमन्यतः

भा.

प्र.१७

९५

J.

* * 世世世本 妆 拉 扩 J. 亚 4

।।रिभिः धातारञ्चविधातारंशङ्खपद्मनिधीतथा लस्यच दक्षिणवामपार्श्वयोः क्रमेणगङ्गायमुने 1 75 *

रिकदेव ओंद्वारदेवताभ्योनमइतिपूजयेत् म्ब्रह्माणञ्चसमञ्चयेदिति ततआसनोपवेशनात्पूर्वमासनोपवे

भा.

米米女子

किनेनदिव्यान्विघ्नान् ओंअस्त्रायफडितिमन्त्रेणजलेनान्तीरक्षगा ाजया

पं ९७ ********* 米米米米米米米米

भा.

米米

प्र.१७

米米米米米米 * ₩.

女子子子子子子子子 米米米 米米米米米米米米米 पञ्चगव्येनमण्डपम्परिशोधयेत् ततःस्वद्शिणेअर्घपाद्याचमनीयम

पू.पं. ९८

एष्ठदेशेहस्तप्रक्षालनाथम्पात्रस्थाप ाञ्जिलःसन् वामे ओंगुरुभ्योनमः ओंपरमगुरुभ्योन *****

मा.

प्र.१७

****** 米米米米米 ** भित्त्वाब्रह्मरन्ध्रगतांस्मरेत् ततोहंसमन्त्रेणजीवम्ब्रह्मणिसँय्यो **** णू.पं. ००

米米米米米

पस्थैश्चक्रमेणयुतानिचतानिविभाव्य ततः समानोदानव्यानापानप्राणान्धरादिम

भा.

प्र.१७

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यमितिबीजंषोडशवारंजपन् वायुनाशरी ****

For Private and Personal Use Only

पू. पं १००

व्विंशोष्य रमित्यग्निबीजञ्चतु साहामातमन्त्रणसमादायहृदयाम्बुजसस्थाप्य *****

भा.

प्र १७

यामल भूतशुादा ****** ***

पू.प 909 米米米米

米米 ****** केठिमितिबीजंऌलाटचन्द्रंनीत्वाकुम्भकेविमत्यसृतबीजेनविह्नमयीञ्चन्द्रादसृतरृष्टि

909

For Private and Personal Use Only

** *********** ** 米 * 汝 ********** * -sIe. 7/6 亦

पू.पं. १०२

मात्मनीति सोहंमन्त्रणयाजनमु 米米米米米米米 ********

भा_

प्र.३७

. . .

For Private and Personal Use Only

निविनियोगः शिरासि ब्रह्मविष्णुमहेश्वरे छन्दोभयोनमः हृदि प्राणशक्तयेदैवतायेनमः गुह्ये आबीजाय व्हींशक्तयेनमः सर्वाङ्गे क्रींकीलकायनमः इतिऋ तिशिरसि[.] णंटंठंढंडंश्रोत्रत्वक्**चक्षुर्जिव्हा**घ्र * 亦

* 米米米米米米米米米米

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra

लिपिन्यसेत्इति तत्प्रकारोयथा विछंदसेनमः हृदिओंमातृकासरस्वत्येदेवतायेनमः गुह्ये हृल्भ्योबीजेभ्यं नमःपादयोःस्वरेभ्यःशक्तिभ्योनमः सर्वाङ्गे अ ाकराङ्गन्यासः अंकंखंगंघंङंआंअङ्गुष्ठाभ्यात्रमःइं

पू.पं. १०४

****** ******** स्यकुर्यात्तालत्रयन्ततः दिशस्तेनैवर्षेध्रीयाच्छोटिकाभिःसमाहितः हृदयादिषुविन्य

भा.

909

For Private and Personal Use Only

*** ** *

米米米米米米米 ********* त् ककारादिद्वादशवर्णान्सबिन्दून्द्वादशद्रुकम

पू. पं १०५

दक्षिण्येनध्येयम् एवन्ध्यालान्यसेत् तद्यथाअनमोललाटे 米米米米米米

भा

प्र.१७

***** एवंइंनमःदक्षनेत्रे ईनमःवामनेत्रे उंऊंकर्णयोःऋंऋंनसोःऌंऌं ओंऊर्दुदन्तपंकों ओंअधोदन्तपंकों अंब्रह्मरन्ध्रे अःमुखे कंदक्षबाहुमूले पंदक्षिणपार्श्वे फंवामपार्श्वे बंपृष्ठे भंनाभौ मंजठरे यंह्रदि रंदक्षबाहुमूले लंककु iहृदादिदक्षिणकरा**त्रपर्यंते षंहृदादिवामकरात्रपर्यं**ते संहृदादिदक्ष *********** पदे हंइदादिवामपदे ळंइदाद्युदरे क्षंइदादिमुखे सर्व्वत्रनमोन्ताक्र्यसेत् हक्षमध्येळ **** 米米米米米米

तोत्रमाणंतु वर्णमालाजपे अनुलोमविलोमेनऋप्तयावर्णमालया आदिळा क्षकारम्मेरुरूपञ्चलंघ मनन्यधीः मृगबालव्वॅरिव्वंद्यामक्षस्त्रन्द्धत्करैः मालाविद्यालसद्दस्तांवहन्ध्र्येयः

भा.

प्र ३७

米米米米米米米米米米米米米米米米米

米米

**

米米米米米米米米米米

米米米米米

米米米米

**** पू. पं. 900 ***

भा.

प्र.१७

9019

****** थिवीन्तथा क्षीराव्धिश्वेतद्वीपञ्चमणिमंडपमेवच ********* ोरोऐश्वर्घाय मुखे अधर्मायवामपाइर्वे अज्ञानाय नाभौ अवैराग्याय दक्षपार्श्वे 女女女 计分分 06

宋·张·张·朱·张·张·张·张·张·朱·朱·朱·朱·朱·朱

米米米

अनैश्तर्याय सर्वत्रत्रणवादिनमोन्तेनन्यसेत् हृदि ओंअनन्तायनमः ायद्वादशकलात्मेननमः ऊंसोममण्डलायषोडशकलात्मने ायद्शकलात्मनेः० संसत्नाय०रंरजसे०तंतमसे०आंआत्मने० अं ा**० पंपरमात्मने० ऱ्हींज्ञानात्मने० इत्यन्त**िव्वन्यस्य इतितन्त्रसारः हृत्प मध्येपीठमन् अन्यसेत् यनमः पादयोःअमुकशक्तयेनमः सर्व्वाङ्गेअमुककीलकायनमः ततस्तत्तत्कल्पोक्त *******

亦)JE

米米米米米米米米米米米米 एतच्चध्यानन्देवतारूपतयास्वचिन्तनम् हत्कमलक दिवताचिन्तनव्वा ततोदेवतारूपतयाध्यातस्यात्मनोमानसैरुपचारैःपूजन ासपुजायथा हृंत्पद्ममध्येदेवतांविभाव्य मूळाधारतउत्थाय न्द्रित्रान्तन्नीता परमशिवेनसहसङ्गमंव्विभाव्य स्वेष्ठदेवताचरणयोःपाद्यन्दद्यात् ततोमनश्चाघ्येन्दत्वा सहस्रद्रलपद्मभुङ्गारलाले पञ्चविंशातितत्त्वेनगन्धञ्चअहिंसाव्विँज्ञानङ्क्ष यान्द्रयां अलोभं अमेरहं अमात्सध्ये अतायां अस्ट्रारं असमं अतेयं दंतियाणि

षू. पं. १०९

ततावायु ********** ाणिचविभागशः तथाकरणदेौर्ब्बल्यादेकमेवप्रशस्यते

भा.

7.9V

李米米米米米米米米米

米米米米米米

**** ****

विशेषाध्येद्वयस्यावश्यकलम् तथाचनवरत्नेश्वरे इति राघवभद्दधृतं सर्व्वत्रैवप्रशस्तीद्धाःशि ङ्कुय्योत् इतितन्त्रसारःत्रिकोणषट्कोणऌ यतिलसर्पपदूर्वास्तत्रनिःक्षिपेत् तन्त्रकोमुद्याम् तता पू. पं

************ ***** ततोमवाह्नम

****** * 茶米 米米米 ागछइहागछ इहातेष्ठइहातेष्ठ इतिम * ** ।भ्यामेवेति नयनमन्त्रंवौषडिति ततःफडितिमन्त्रेणगा**लि**र्न ***

पू. पं 999 Ŋ,

STE 1 3K त् सकलाकरणञ्चदवताङ्गपडङ 亦亦 ाक्ष्यासहासनादोतत्तद्देवतायन्त्रादिपूजापीठंसस्थाप्यपीठ 松松松松

भा,

प्र.१५

999

For Private and Personal Use Only

杂杂杂 प्रथिव्ये क्षीरसमुद्राय मणिवेदिकाये रत्नसिंहासनाय अग्निकोणे धर्माय नैर्ऋतीवाय्वीश ***** *****

षू. पं. ११२ ********* क्षतद्वातवचनात तिस्रिपीठेभूर्ज्जपटेभुवि विनायन्त्रेणचेत्पूजादेवतानप्रसीदिति कल्पो

भा.

प्र १७

秦米米米米米米米米米米米米米米米米米米 रिमष्टदलंलिखेत् इत्यभिधानात् * ाळ्यभाव्यवामनासामार्ग्गणवायुबीजेन ****

रूपेहसौःकार्णिकेस्वरद्वन्द्वाष्टकशे प्यंसाधकोत्तमेरिति ओंदेवेशिभक्तिसुलभे परिवारसमन्विते यावन्वांपूज ** *****

भा.

प्र.१५

*** 松松松松松 妆 मूलाधारेप्रदीपाभन्दैवन्तेजोविचिन्तयेत् मूलमन्त्रेणतत्तेज 书米书 水 * **亚** 汝 A.

米米

पू. पं

*

·米米米米米米米米米米米米米米米

प्योँज्यानीयभा**लांतञ्चिन्तयित्वेष्टदेवताम्** ****

For Private and Personal Use Only

米米

米米米米

ॱ**लेलिहानमृद्रयादेव्यात्हद्येकरन्द**त्वाऑ[्]हींक्रोंहंसःश्रीअमुक प्राणाइहप्राणाः ओं है कोंहंसः श्रीअमुकदेवतायाः जीवइहस्थितः औं है किंहंसः ाःसर्वेन्द्रियाणिइहस्थितानि ऑॅंहीक्रेंहिंसः अत्रेदम्बोध्यम् प्रतिष्ठितप्रतिमाशालियामादिपी शालग्रामेस्थिरायाव्वाँनावाहनविसर्जनेइत्याभिधानात् एव 'छिन्यामपिनावाहनविसर्ज्ञनेशालग्रामशिलात्वाविशेषादित्येके*र*वकीयत्हद

पू. पं. ११५

।दोेहिनित्यंसन्निहितोहरि[ः] इतिकेचिद्रदन्त्यत्रबेोधा इतिसिद्धान्तसारीयवचनस्यानुरोधतः

भा.

994

For Private and Personal Use Only

कुण्डालनातुाद्वावधा वामावत्ताभवद्रखावतुंलित्रतयायदि ाणावतसाञ्ज्ञका नवाङ्गनसमाकृत्य **ाशुभ**त्युक्तलात् ततावगुण्ठन तञ्चपुष्पण स्यषडङ्गन्यासएवततोधनुमुद्रयावीमेत्यसृतीकृत्यपरमीकरण पू. पं. ११६

आदोमूलन्ततोद्रव्योल्लेखः ततःसम्प्रदानम् ततस्त्य ामुद्रयास्वागतन्तेइतिपठेत् ततः श्यामाकविष्णुक्रा ******

भा.

प्र.१७

998

米米米米米米米米

五米米米米 इतिदेवताशिरसिद्यात् वैष्णवेत ततःकास्यपात्रदध्याज्यम ******* ोलामूलमुच्चार्य्यएषमधुपर्कःअमुकदेवतायैस्वधा इतिमुखेदद्यात् ततःपुनराचमनी 米米米米米

390

JZ.

亚 aTe.

述 近

For Private and Personal Use Only

·3:-मुकदेवतायेवोषट् इतिपुष्पाणिदद्यात् अत्रतन्त्रकोमुद्याम् ।त्तत्रघंटेतुपरमेश्वरि यन्त्राधिष्ठातृदेवांश्चघटवक्रेत्रपूजयेत् समस्तदेवतारूपंघट ******

米米米米米米

भा.

प्र १७

991

米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米

来来来来来来来来 ******

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पू. पं. ११९ ********* がが *****

For Private and Personal Use Only

7

少女女女女女女女

妆

がかか

अङ्गुष्ठकनिष्ठानामिकाभिः ओंअपानायस्वाहा र्जनीमध्यमाभिः ओंव्यानायस्वाहा अनामामध्यमांगुष्ठेः ओंउदानायस्वाहा ोध्यममानामाभिः ओंसमानायस्वाहा सर्व्वाभिरिति अथब्रह्मेशास्येः अत्रपुन्देवतापक्षेऊहःकार्यः अत्रैवपानार्थम्पानीयन्त ाङ्कुय्योत् तद्यथा तत्रात्मदक्षिणहस्तप्रमाणञ्च ण्डिलङ्कृत्वा मूलेनवीक्ष्यफडितिप्रोक्ष्यतैरेवकुशैःसन्ताड्य हूमितिमन्त्रे

भा.

米米米米米米米米米 पं 来来来来来来来来来来来来

ग्निमादायतदंशङ्*ग्र*हीला नैर्ऋतकोणेओंक्रव्यादे भाभावह्नमहाशक्तसव्व * 6.张老老老:

並

米米

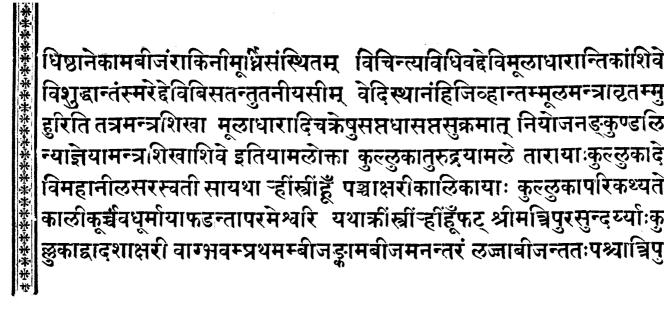
मन्त्रार्थेभावनाम् ४ शिरःपद्मेगुरुध्यानम् रियवाद्दष्ट्वासेतुं२१पुनर्ज्ञपेदिति सरस्वतीतन्त्रेत्रथमपट षू. पं.

松松

स्यात्ततोमन्त्रशिखाम्भजेत् ततोपिमन्त्रचैतन्य ाममितिक्रमः चतुर्थपटले कुल्लुकांमुर्ह्<u>धि</u>सञ्ज ***** महासेतुंविशुद्धोचकण्ठदेशेसमुद्धरेत मणिपूरेतुनिव्वीणम्महाकुण्डलिनीमधः स्वा

भा. प्र.१७

939



पं

ऐंक्कींव्हींत्रिपुरे दिततः तताभगवातपदमन्तेठह्रयमुद्धरेत् यथा ********** णवम्पूञ्वमुद्याय्यम अथ मात्काञ्चसमस्ताञ्चपुनःप्रणवमुचरत् एव

भा. भ्र.१७

922

ोतिज्ञेयम् तत्रेवप्राणयोगः माययापुटितोमन्त्रः दीपन्यपितत्रेव * सचक्रमेणजपस्याद्यन्तयोःकार्यः सचत्रणवपुटितस्य कुलार्णवे ब्रह्मबीजम्मनोई लाचायन्तेचमहेश्वार

त्रेसंस्थाप्य हीं मालेमाले महामालेसर्वशक्तिस्वरूपिणि सिद्धिदाभवेतिमन्त्रेण ओंअमुकदेवतामालायेनमइत्यर्घोदक मालाम्सम्पूज्य ऱ्हीं अविव्रङ्कुरुमालेलञ्ज ाछेनमोस्तुते इतिमन्त्रेणदक्षिणहस्तेनग्रहीत्वा ******

क्षिपेत् ततोमाळांस्थापयेत्

诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛诛

પૂ. પં ૧૨૪

> が ス

भा.

प्र १७

928

来来来来来 चादिपाठः जपसमर्पणानन्तरंनित्यहोमश्रदृश्यतइति ततःप्रदक्षिणामष्टाङ्गप्रणा पुष्पाञ्जलीन्दबादक्षिणहस्तचुलुकेनजलपुष्पा 米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米 पुनजलाक्षतादीन्यादायमाम्मदी त्सत्पुनजेलादीन्यादाय औस। ******* |कदेविपृजितासिक्षमस्वेतिविसर्ज्जयेत्

येनमइतिपठित्वातत्रप्राक्षेपेत् **ःशङ्खस्यावशिष्ठज**ळंशरीरेळेपयेत् *****

For Private and Personal Use Only

तालत्रयञ्चदिग्बन्धःत्राणायामस्ततःपरम् ध्यानेपूजा

李米米米米米米米米米米米米

******* 米米米米米米米 米米米米米米米 ***

米米米米米米米米 *****

मालावर्ण नालापद्माक्षादिमालाच मिक।मध्यममुखपर्व्वकनिष्ठापर्व्वत्रयानामामध्यमाग्रपर्व्वतर्ज्जनीपर्व्वत्रयघटिता ******

भा.

4

प्र.१७

356

For Private and Personal Use Only

*

*

**

*

**

×

तत्रप्रादक्षिण्यक्रमेण पस्यसम्पादनीयं तत्रायव्विंधिः छिद्ररहितसंहताङ्गुळी

पू. पं.

於米

* ,2**\$**2,

पस्योपपाद्याष्टानामपिवर्गाणामन्तिमेषुवर्णेषुजिपलाऽष्टोत्तरत्वंसम्पादनीयम् 米米米米

参

1/2

प्र.१७

हारादिक्षकारान्तवर्णा तन्त्रोक्तविधिनाकृतसंस्कारा आदावकन्ततः सप्तसप्तसप्तकमण्तु

पू.पं.

रंशतमितितन्त्रान्तरेऽभिधानात् इमान्तुमाल प्यकृतोजपोऽतिप्रशस्तः मुण्डमालातन्त्रे चतुंव्वैश ******* माभ्याञ्चचालयेन्मध्यमध्यतः तर्जन्यानस्पृशेदेनाम्मुक्तिदोगणनऋमः

भा.

प्र.१७

986

松松松

*

****** * 7

पु. पं.

वामहस्तस्यतर्जन्यान्दाक्षणस्यकानिष्ठया॥तथादक्षिणतर्जन्याव्वामाङ्गु

मा.

प्र १७

929

ष्ठेनयोजयेत्॥ उन्नतन्दक्षिणाङ्गुष्ठव्वामस्यमध्यमादिकाः॥अङ्गुलीय्योजयेत्पृष्ठे दक्षिणस्यकरस्यच॥कूर्म्मपृष्ठसमङ्कुर्यादक्षपाणिश्चसर्व्वतः॥कूर्ममुद्रेयमास्या तादेवताध्यानकर्मणि॥६॥ हस्ताभ्यामञ्जलिम्बद्धानामिकामूलपर्व्वणोः॥ अङ्गु ष्ठोनिःक्षिपत्सयम्मुद्रालावाहिनीरमृता ॥ ७॥ अधोमुखीलियञ्चेत्स्यात्स्थापनी मद्रिकास्मृता॥८॥ उच्छिताङ्गुष्ठमुष्ट्योस्तुसंय्योगात्सिन्निधापिनी॥९॥ अंतःप्रवे

For Private and Personal Use Only

र्जिनीमध्यमानामाःसमङ्कुर्यादधोमुखं॥अनामायाक्षिपेद्रृद्धामुज्वीङ्कृत्वाकनिष्ठि



का॥हस्तौतुसंमुखौकृत्वासन्नतप्रोत्थिताङ्गुली॥तलान्तम्मिलिताङ्गुष्ठौसुभुन्नौसु

॥ किनेष्ठाङ्गुष्ठकोलय्रोमुद्रैषाचक्रसञ्ज्ञिका ॥ १९ ॥ अङ्गुष्ठेनामिकाम् * ॥२०॥ पद्माभश्चवामहस्ते।यासमुद्राप्रकीर्त्तता॥२१॥ कनि * . ष्ठेर्दक्षहस्तस्यसय्युँतैः॥ कथितामुनिभिःत्राणमुद्रापरमदुर्छभा ॥२२ तैरितिसर्वत्रतृतीयान्तेनान्वेति ॥ मध्याभिरित्यादेोछिङ्गविपरि 未来来

For Private and Personal Use Only

षू. पं १**३**१

*

46

ऊद्वोस्यन्दक्षहस्तकम्॥ क्षिप्त्वाङ्गुळीरङ्गुळीभिःसङ्ग्र एषासंहारमुद्रास्याद्विसर्जनविधौरमृता॥२७॥ तत्तनमुद्राकरणा तिमीतन्त्रे॥ मनसाविन्य सेत्तास्ताः पुष्पेणैवाथवामुने॥ ॥ इतिपूजापङ्कजभास्करे आगमोकेष्टदे चान्यथाविफलम्भवेदित्यभिधानात्॥ ामसप्तद्रगःत्रकाशः॥ १७॥ साचाचारान्नित्यायाअपिब्रह्मपूजातःप्रागेवविधेया तस्याइतिकर्त्तव्यता

भा.

ਸ. 3 ਪ

0 2 4

3 3 3



114 हरोमहेश्वरश्चेवशूळपाणिःपिनाकधृक् आवाहनचस्त्रपन हरादीनिचनामानिमहादेवान्तानिकीर्त्तयेत् म्परिधाय ओंहरायनम इतिशुभमृत्तिकामाहृत्य ओंमहेश्वरायनमइति स स्तंत्रसन्नम् पद्मासीनंसमन्त 4 4 *

पू.पं.

並

米米米米米米米

米米米米米米米米米米米米米米米

तिव्यसानव्यिश्वाद्यव्यिश्वबीजन्निखिलभयहरम्पञ्चवक्रन्त्रिनेत्रम् इतिध्यात्वा अ द्यादीनिद्द्वा ओनमःशिवाय एषगन्धः ओशिवायनमः इतिगन्धान्द्य *न्तिम*ष्टसुदिक्षुवेद्यामष्टमूत्त ****** ओंशर्वायक्षितिमूर्तयेनमः १ ओंभवायजलमूर्तयेन

भा

प्र.१९

933

ओंरुद्रायाग्निमूर्त्तयेनमः ३ औंउग्रायवायुमूर्त्तयेनमः ४ ओंभीमायाकाशमूर्त ओंपश्चपतयेयजमानमूर्तयेनमः ६ ओंमहादेवायसोममूर्तयेनमः ७ इति तथाच भविष्यपुराणे ** ष्टिमृर्तिरुक्तऋमेणेतिवाक्यार्थः ततः औंमहादेवायनमः औंमहादेवपूजितो A. 370 *

पू. पं. १३३

**

**

水米米米

तिविसर्ज्ञयेत् ततः ओंचण्डेश्वरायनमइति द्रव्यैः प्रतिपत्तिरूपेण ओंब्रह्मणेनमइतिभूमौकार्या अस्यध्यानम् ब्रह्माचतुर्माखः

भा.

प्र.१९

933

※

米米米米米米



米米米米米米米米米米

፞ጙጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜ

* ** À. がが

पद्मगर्ब्भवर्णश्चतुर्ब्भुजः ऊर्ध्वाधःऋमेणदक्षिणहस्ताभ्यांस्त्रवं

本米

पं. 938

(सर्व्वयत्नेविधानतः**)** *

भा.

प्र.३

. . .

938

For Private and Personal Use Only

समन्त्रांनेत्यपूजामात्रनिवृत्तिपरत्वा ***** - SE

વૂ. **વં**. ૧૩૫

न्तिशिष्टाइत्यभिहितमितिबोध्यम् ॥ १९॥ ॥ छ ॥ अथ विंदाः प्रकाशः ॥ ततो

भा.

प्र २०

934

चतुर्व्विधाभजन्तेमामित्यादिइत्यवतार्थ्य

भा

934

米米米米米米 **प**. ******************

公米米米米米米米米 ामइत्येवञ्चतुर्विवधाःतत्रआर्तः आर्त्याशत्रु**व्य** ********* नचसूर्यादीनामीश्वरताभावात्तदीयका

** ^{भ्}धकलंस्यादेवेतिवाच्यम्येप्यन्यदेवताभक्तायजन्तेश्रद्धयान्विताः 米米 धिपूर्व्वकम् अहंहिसर्व्वयज्ञानाम्भोकाचप्र ात<mark>बेनातश्च्यवंतिते इतिभगवदुक्तेः परमेश्वरा</mark>भेदबु * 米米米 ** ाश्चीनाम् मायावच्छिन्नचैतन्यरूपवावगमा ***

पू. पं १३७

> **张** 张

तिनकाप्यनुपपत्तिः तेचोपनिषदादयोयंथविस्तरभियानिळिखिताइतिबे गिवतत्ततीयाध्यायेभिधानात् अत्रश्रीधरः रोचनार्था कर्म्मणिरुच्यू तत्रनखण्डलडुकादिलाभोगदप 米米米米米米米米 रोगनाशस्तद्वत् ततश्चकम्माभिरुच्यावेदार्थविचारयति तथाच योवाएतदक्षरमवि

भा.

प्र.२०

930

710 安米米 米 沭 'छोकात्त्रेतिसक्रपणः इत्यनात्मज्ञस्यक्रपणतातमेतव्वॅदा तपसा श्रद्धयायज्ञेनानाशकेनचेति यज्ञादीनांज्ञानशे कामितस्यैव स्वग्गादिः फलबेनावगमादकामितोऽसोनभवतीतिनै तीति अतएवभगवद्गीताष्टादशाध्याये एतान्यपितुकर्माणिसङ्गन कर्तृताभिनिवेशं फलानिचाऽभिसन्धीयमानानित्यत्कान्तःकरणशुद्धये कर्माणि क

ांक**∓र्माधिकृतेःकम्मांणित्या**ज्यानि ***************** रुयतात्मवानुइति अत्रश्रोधरः नशक्तोसितिहमद्योगंमदेकशरणन्त्वमाश्रितःसन्स

भा.

प्र.२०

936

For Private and Personal Use Only

त्प्रसादेनकृतार्थोभविष्यसीतितात्पर्यमिति पञ्चमेऽध्यायेऽपि ब्रह्मण्याधायकर्माणि

पू. पं. १३९

ालोकान्हिनस्तीति सवाग्वजोयजमानंहिनस्त

भा.

प्र.२०

3 2



वियन्नागहिमांशुवलिते १८०४शुभे॥ पेषिसितेपञ्चदश्याङ्ग्रन्थोऽयंपूर्णतामगात् ३ ॥ इतिपूजापङ्कजभास्करेविंदाः प्रकाशः॥ २०॥ समाप्तोऽयंग्रंथः॥

सचनाः

मिथिलादेशान्तर्गतद्रभङ्गाराजधानीस्थविविधबिरुदालीविराजमानमानोन्नत ाजाधिराजश्रीश्रीमद्रुणेश्वरसिंहेन एतानि विद्वद्भिः कारितस्य पूजापङ्जभा न्थिस्य सहस्रसंस्थाकानि पुस्तकानि आसन्नविद्वज्जनेभ्यः सकल णालये अङ्यित्वा आविष्कृतानि, अस्य ग्रन्थस्य पुनमुद्रणाद्याधिका दासात्मजाभ्याम् गङ्गाविष्णुखेमराजगुप्ताभ्याम् परोपकाराय अदायीति शम्.

| पूज पूज दिक्के स्थ | | | | ध इ | मथ | स्य | य्रन | थरर | ग शुद्धाशुद्ध ा | पत्र | म्॥ | | | |
|-----------------------------|--------------------------|-------|---------------------|------------|-----|-------|-------|---------|------------------------|------|-------------------|---------|--------|---------|
| | અ શુદ્ધ | | शु | <u> इं</u> | ı | पत्रं | पृष्ठ | पंक्तिः | અગુહં | ١ | शुद | ् पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
| पूज | ायाश्चनुर्णाम् | 1 | पूजायाञ्च | | | Q | 9 | 8 | प्रसाधनम्नां • • | | प्रसाधनं सा | ٠. و | 9 | 3 |
| पूज | ाकर्च्येत्यर्थः । | | पूजाकार्य्य | त्यर्थः | | ફ | 8 | 8 | मज्जनम् •• | • • | मञ्जनम् 😶 | ٠٠ و | 8 | 8 |
| दिब्रे | द्धन · · · | | दिं छेद्धन | • • | | 8 | २ | 8 | मासुरीं व्येता • • | • • | मासुरी वेते" ला. | 80 | 8 | 8 |
| त्रयम | म्बकेण • • | | त्र्यम्ब केन | • • | | 6 | 8 | 8 | प्यन्हः • • • | • • | प्यह्नः • • | 20 | 2 | 2 |
| मध | यान्ह 🕠 | • • ; | मध्याह्न | | • • | 9 | 8, | २ | मात्रं विवविक्षतं | * * | मात्रव्यिंवक्षितं | 90 | 2 | 8 |
| एव | मप्रेपि मध्याह्नप | ₹ | • | | | | • | • | कृतछन्दोगान्हिकं | | कृतछन्दोगाह्निकम् | 90 | २ | ६ |
| 5 | र्वाङ्कपराह्य शुर्दे | ष | | į | | | | ŀ | एवमन्यत्रापिहका | | | ` ` | , | • |
| प | ञ्चमात्पूर्व्योहव | | - | : | | | | | रोनकारोज्ञेयः | | | | | |
| रो | ाज्ञेयः 🐍 | | | | | | | | सुचितवानु •• | | स्चितवन्तः • • | 66 | 8 | 3 |

| | 米米米米 | | | | | | | | | | | | | | 米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米 | |
|------------------|--|----------------------|-----|------------------------|-------|--------|---------|-------------------|-----|------------------|-----|------------|-----|--------|--------------------------------|-------|
| Hotio. | * | अशुद्धं | | ् शुद्धं ू | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः | अशुद्धं | | शुद्धं | - | पर्त्र | ਧੁਣ | पक्तिः | * | गु० |
| पूर्व । ॥ १ ॥ | | यज्ञोत्तरङ्कार्य्यम् | | यज्ञात्तरव्याकाय्यमः | 155 | 8 | 3 | मूर्खाणांय्युक्त. | • • | मूर्खाणाय्युक्त. | •• | १६ | ૅર | 9 | * | |
| " < " | 李米米米米米 | द्विविधस्मृतेः 🕬 | • • | द्विधस्मृतेरितिदाँक्षि | | 1 | | परीमाणाच · · | • • | परीमाणच · · | • • | 80 | 8 | २ | * | |
| | 麥 | | | णात्याः 🐺 🕠 | 188 | 2 | Ç | मानंघ्यत् · · | | | • • | १७ | 8 | ५ | 平 | |
| | * | यज्ञान्तरंज्ञा . | • • | यज्ञानुन्तरव्यो, 🗼 | 133 | २ | 8 | लिङ्गंय्यथाक्र. | • • | लिङ्गय्यँथाक्र. | • • | 80 | 8 | 9 | 来 | |
| | * | अन्तर्चेष्टे 🕠 | ٠. | अन्तेचेष्ट् · · · | 12 | 8 | ६ | इछते 🕌 🕠 | • • | इच्छते · · · | • • | 80 | 9 | 6 | * | |
| | * | पूज्योन्तेच 🕡 | • • | पूज्योद्यन्तेच · · · | 1 24 | 8 | ६ | आकाशेचा \cdots | • • | आकारीच · · | •• | 50 | ર | 6 | 釆 | |
| | * | ब्राह्मण · · · | • • | 71 (11 11 | 124 | २ | 3 | ततद्देवता · · | • • | तत्त्वेवता · · | • • | १९ | 2 | 9 | 类 | |
| | 米 | वितस्तिप्रमिता. | • • | वितस्तिपर्यन्तप्रमिता, | 188 | 8 | 6 | दारवेणानु · · | • • | दार्त्रणनु · · | • • | २० | 8 | 8 | 来 | |
| | * | सप्ताङ्गुलि \cdots | • • | | 188 | 8 | 6 | पद्मपात्राभ्याम्. | • • | पद्मपत्राभ्याम्. | • • | २० | ર | ६ | * | |
| | * | पूजाविरुद्धा · · | • • | | १५ | २ | 8 | पुण्डरिका 🕠 | • • | पुण्डरीका 🕠 | • • | २१ | ર | 8 | 茶 | ા ૧ ા |
| | * | योगिनाव्वांह्य. | • • | and in the second | १६ | 8 | 6 | यथालभम् 😶 | • • | यथालाभम् · · | • • | २ १ | २ | 4 | * | |
| | * | यस्मत्तस्मा र् 🕟 | • • | यस्मात्तस्मात् · · · | १६ | 3 | 8 | पद्य · · · | • • | पाञ · · · | • • | २३ | ર | 8 | * | |
| | ************************************** | | | • | | | | | | | | | | | 來 | |
| | 茶 | | | | | | | | | | | | | | * | |
| | 类 | 1 | | | | | | 4 | | | | | | | * | |

| | ् अशुद् <u>धं</u> | | शुद्धं | Ì | पत्रं : | ਦੂ ਤਂ | पंक्तिः | अशुद्धं | | शुद्धं | पत्रं | ਧੂ ਲਾਂ | पंक्तिः |
|---|--------------------------------|-----|---------------------------|-----|---------|--------------|---------|--------------------|-----|-----------------------|-------|---------------|---------|
| 1 | मात्रेणाप्रीत्यर्थ | • • | मात्रेणापीत्यर्थ. | • • | 28 | 3 | e | ब्रह्माङ्गलग्नंविव | • • | ब्रह्माङ्गलप्तविवँ 🕠 | 90 | વ | 8 |
| ١ | सँय्युतम् 🕠 | • • | सय्युँतम् 🕠 | • • | 58 | 2 | 4 | जीर्ण · · · | ٠. | जीर्णम् · · · | 20 | २ | Q |
| ľ | फालवास्त्र \cdots | • • | फालब्बास्त्र 😶 | • • | २४ | २ | 6 | मन्यद्भृतम् · · | ٠. | मन्यधतम् · · | 90 | २ | G. |
| 1 | मनुत्तम् 🔾 | | मनुत्तमम् 🕐 | •• | २५ | 9 | २ | उपवीतम् · · | • • | आभरणम्मणिस्वर्णा | | | |
| ŀ | द्धिदृर्वोङकुदौः तस्यदेयानि | | दिधदुर्वाकुदौः | • • | २५ | 3 | 6 | - | | दिनिर्मितंषोडशोप | | | |
| ŀ | तस्यदेयानि 🗼 | | तस्यैदेयानि · · | • • | २६ | २ | 8 | • | | चारान्तरे उपवीतम्. | 30 | વ | ६ |
| 1 | दातव्यंय्येन 👵 | | दातव्ययेयॅन · · | • • | २६ | २ | २ | सर्वदेवानाव्विहित | ानि | सर्वदेवानाव्विंहितानि | २८ | ર | 8 |
| 1 | विंदापलल्लिङ्गे | • • | विंदापलल्लिंड <u>्</u> गे | • • | २६ | २ | Ģ | प्रोक्षाणान् 🕠 | ٠. | प्रीक्षणात् · · · | २९ | 9 | ૪ |
| 1 | ततःपरः · · | •• | ततःपरम् · · | • • | २६ | २ | ६ | गृहस्थिते · · | • • | गृहस्थितेषु · · · | 26 | 9 | ६ |
| | जटामास्या \cdots | •• | जटामांस्या 😶 | • • | 90 | 8. | 1.8 | उत्तरणीयम् · · | | उत्तारणीयम् •• | 26 | ર | 9 |
| 1 | नरसिंव्ह | • • | नरसिंह 💹 | • • | 90 | ∷ 9 | Q | ******* | | जात्याः प्रहरेणं 🕠 | 36 | 2 | ٩ |
| 1 | यवगाधूमजैश्वेर्णे. | • • | यवगोधूमजैश्रुर्णे | • • | 20 | ::9 | Q | सिललम् 🕠 | | मलिनम् \cdots 🕶 | 1 1 | ર | 2 |

| पं० २॥ ३ | भू क्षेत्र क् | | गुदं | ∖ पत्रं | ਧੂ ਝ | पंक्तिः | अ शुद्धं | | गुदं | पर्श्र | पृष्ठं | पंक्तिः | ************************************* |
|-------------|---|-----|--------------------------|---------|-------------|---------|----------------------------------|-------|-----------------------|--------|--------|---------|---------------------------------------|
| ۲ " ا | गृण्हीयात् 😶 | • • | गृह्धीयात् एवमन्यत्रा | | | | हस्ताभ्यङ्गेषु . | • • | हस्ताद्यङ्गेषु. • | ३५ | .8 | २ | * |
| 3 | * | | पि हकाराधी णकारी | 1 | | | दान् · · · | • • | दानम् · · · | 1 47 | 8 | 3 | * |
| 3 | | | ज्ञयः · · · | 177 | २ | 8 | पञ्चोपचाराः | • • | पञ्चापचारा. | 1 44 | 8 | 8 | 类 |
| 3 | ब कुलंम्बिना • | | वकुलिवाँ ना 🔻 🗼 | 136 | 3 | 8 | वस्रात्यगिवेति. | • • | वस्त्रात्यागिवति. | 1 44 | 8 | 8 | * |
| 3 | कल्हार •• | • • | कहारएवमन्यत्राप | | | ĺ | भूपनैवेद्यादी नि | • • | भूपदीप्नैवेद्यादीनि • | 38 | 8 | 9 | * |
| 3 | K | | हकाराधीलकारोज्ञेय | : २९ | २ | ५ | अवस्यन्देयानि | • • | अवद्यदेयानि. • • | ३६ | 3 | २ | 光 |
| 7 | स् उपचरास्तथा. | | टपचाराँस्तथा. • • | 39 | २ | 2 | रक्तचन्द | • • | रक्तूचन्दन · · | ३६ | 2 | 6 | * |
| 7 | नित्राल्हादकरः | | | 39 | २ | 8 | कत्तर्वम् · · | *. • | कर्त्तव्यम् · · | 80 | 9 | 9 | * |
| 3 | ि तिकुचादिक ∙ ∙ | | लकुचादिक · · · | 1 | १ | 3 | सुवाटिका • • | • • | स्ववाटिका · · · | 90 | 2 | 9 | * |
| à | से कदिल. 🕠 | | कदली · · · · | 1 | १ | ६ | मूमिस्पृष्टा · · निव्जीपनीयः. | 4. 9x | a 1 c c c | | 8 | २ | 事 11 |
| | किल्बिषी. •• | | किल्विषी • • | 1 | २ | ६ | निव्यपिनीयः. | •. • | निर्वापणीयः . 🕠 | 80 | 8 | 9 | **** |
| 13 | निःक्षिप्रेत्. · · | | निःक्षिपेत • • | 1 | 2 | દ | अपक्रममिषकव्य | Ť·· | अपक्रत्वममिपक्रत्वव्य | 1 80 | 8 | Ge. | * |

| અ શુર્હ | शुद्ध | पत्रं 🍹 | ਧੂ ਲਂ | पंक्तिः | अशुद्धं | İ | शुद्धं | पत्रं | ਪੂਲ | पंक्तिः |
|-----------------------|------------------------|---------|--------------|---------|------------------|--------------|-------------------------|-------|-----|---------|
| जपेहामे · · | जपेहोमे · · | 85_ | ૅર | ३ | वन्ध्या · · · | • वन्ध्र | या •••• | 88 | 3 | 8 |
| प्रकरस्थ · · · | प्रकरणस्थ · · · | 85 | શે | 4 | मक्षिका · · · · | • • भिक्ष | का · · · | 88 | 8 | 9 |
| सोमक्रेतव्य · · · | सोमःक्रेतव्य · · · | ४२ | १ | ६ | धरिण्याम् 🕠 | • । धर्ण्य | याम् \cdots \cdots | ४९ | 9 | 4 |
| इत्यधिकारण •• | इत्यधिकरण, •• | ४२ | શે | ६ | कुर्वन्ति · · · | • वुर्वीत | Ŧ · · · · · | 86 | २ | 2 |
| गाक्रेतिसामस्यवीदृष्ट | गोक्रीतसोमस्यैवादृष्ट. | ४२ | 9 | e | गर्वांतक्षम् · · | | न्तँक्षम् · · · | ४९ | 3 | 4 |
| चोपचाराः दक्षिण 😶 | चोपचारादक्षिण •• | ४२ | 3 | e | चोलकछन्न \cdots | • चोल | तच्छन्न∙ •• | 90 | 9 | Ę |
| धर्मतदलामे 🕠 | धर्मस्तदलाभे. •• | ४३ | 8 | ६ | महा ९असि \cdots | • • महा १ | २॥ऽ असि 🕠 | Çe | 2 | • |
| सस्मृतसम्भार · · | सम्भूतसम्भारः •• | 88 | વ | 8 | म्मृदिश्च · · · | • • म्मृद्धि | | 40 | २ | Ę |
| सायानशासु · · | सायनिशासु · · · | 88 | 2 | 9 | मंन्दिर. •• | • मन्दि | . | 90 | २ | é |
| निरञ्जनं • • • | निरञ्जनम् • • | ४६ | 9 | Q | एवह्यर्घी 😶 | • • एवहा | | 48 | 9 | 9 |
| वद्ति • • • | वदन्ति. • • • | ४६ | વં | 8 | शिल्डक •• | • • शिह | क एवंसर्व्य त्रह | | • | ` . |
| दीका · · · · | दीपिका | 80 | 8 | 8 | · | कारा | धःप्रदेशेलकारः | ५१ | 9 | G |

| ************************************** | अ३ | गुद्धं | | शुद्धं | | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः | अशुद्ध | | शुद | पत्रं | ਧੂ ਤਂ | पंक्तिः ३ ३ |
|--|--------------|--------|-----|-----------------|-----------|-------|--------|---------|-----------------|-----|------------------------|--|--------------|-------------------|
| * | काशा∙∙ | • • | ٠. | काश · · | • • | 49 | 3 | ६ | | | न्तस्थवकारोज्ञेयः • | . ५६ | 3 | ₹ 3 |
| 季 | कुरण्टक | • • | ٠. | कुरुण्टक 🕟 | • • | 69 | 8 | 6 | होतारंव्विश्व. | | होतारव्विँदव · • | . ५६ | २ | |
| * | जातीजवा | • • | • • | जवाजाती 🕟 | ٠. | 49 | 8 | e | देवा श्आसा • • | ٠. | देवाँ २॥ ऽआसां 🕠 | <i>e \oldsymbol{\oldsymbol{\oldsymbol{O}}}</i> | 8 | 1 3 1 |
| * | बञ्बेर | • • | ٠. | वर्व्यर • • | • • | 68 | 2 | ३ | वक्र · · · | • • | वक्र · · · | . ५८ | २ | 8 13 |
| * | पष्पाणाम् | • • | ٠. | (3) | • • | 42 | 9 | 8 | दुरितात्यप्तिः. | • • | दुरितात्त्यप्रिः • | . 46 | 3 | 3 7 |
| * | भ्रभरिका | • • | ٠. | भ्रमरिका 🕐 | • • | ५३ | 2 | Q | इमस्ताम · · | • • | इमंस्तोम · · | . 46 | २ | 3 3 |
| * | भल्लकं | • • | | भुल्लकं 🕠 | • • | | 2 | e | भद्राहीचः 😶 | | भद्राहिनः • • | . ५८ | २ | 8 4 |
| 茶 | इदम्मानीयं | ٠. | ٠. | इदंस्नानीयम् | • • | 1 | 2 | 3 | वासिनींइति · · | • • | वासिनीमिति · · | . ५८ | २ | が、おおおといいのでものである。 |
| * | रक्तचंन्दनं | • • | • • | रक्तचन्दनं 🕟 | • • | ५४ | 2 | 3 | जातीजवा 🕠 | • • | जवाजाती 😶 🕠 | . ५१ | 9 | 4 |
| * | पृथग्दद्यात् | • • | • • | पृथक्पृथग्दद्या | Ţ ·· | ५५ | 9 | 2 | धुत्तूर · · · | | धत्तूरएवंसर्वत्रवधत्तू | | - | |
| 柔 | वामार्व्ध | • • | • • | वामोर्द्ध 🕐 | ` • • | ५५ | २ | Q | 3 3. | | रोज्ञयः · • | . ५९ | 9 | やなる |
| * | बिल्वपत्र | • • | • • | विल्वपत्रएवंस | र्वित्रा. | '' |] |) ' , | द्रोणा · · · | ٠. | द्रोण · · · | 4 4 | 9 | 4 |

| अगु दं व्वन्धुक ः नांव्विहितानि । दिवसङ्गिङ्गे ः स्याटिकम् ः प्रमञ्जिङ्गं ः प्रमञ्जिङ्गं ः दङ्नुखेन ः मृत्युंन ः फुठंव्वक्तुं ः पिनिनिदा | | | | | | | | ਜ ፡ ፥ |
|--|---------------------|-----------|-----------------|--------------------------|------------------------|------|-------------|--------------|
| अशुद्धं | । शर्द | पत्रं । प | प्रष्ठं पंक्तिः | अशुद्धं | शुद्धं | पत्र | पृष्ठं पंचि | ন ঃ |
| ब्बन्धक • | • वन्धुक • • • | ५२ | १ ६ | वाण · · · | · वारण · · · | - ६३ | २ ७ | 3 |
| नांव्विहितानि . | • नॉव्विहितानि. | ५९ | वे दे | तंब · · · · | ∙ लम्ब • • • | 1 | १ इ | 4 |
| दिवसक्षिङ्गे · · | · · दिवसल्लिंङ्गे | 80 | २ ६ | ज्यम्बकॅय्यजाम हे | 🕠 त्र्यम्बक्ययँजामहे 🕟 | | २ ३ | * |
| स्याटिकम · · | · स्फाटिकम् · · | ६१ | 8 9 | कस्तुरी · · · · | • कस्तूरी. • • | - ६४ | २ ६ | 3 |
| प्रकणे | • प्रकरणे • • • | ६२ | १ २ | कराँट ∙ ∙ ∙ | ·· करहाट. • • | • ६५ | 8 | . 3 |
| पमंझिङ्गं 🕡 | • • पमल्लिंङगं • • | ६२ | रे द | बकुल · · · | · विकुलएवंसव्वित्रान्त | | | 3 |
| साध्वित्यर्थः | • साध्वीत्यर्थः. | ६२ | वे १ | | स्थवकारोज्ञेयः • | . ६५ | १ ५ | , , |
| दङ्नुखेन · | • । दङमखेन • • | ६२ | २ ६ | विहि · · · | ∙ विहित • • • | • ६६ | १ व | 1 |
| त्रिपुण्डेन •• | ः त्रिपुण्ड्रेण • • | • ६३ | १ ५ | दिधन्थ. •• | • विधित्थ • • • | - ६६ | १६ | |
| मर्त्यन • • • | • मत्यर्च • • | • ६३ | वे ३ | तैलनिषिद्धम्. | | - ६६ | २ १ | |
| पृत्युः फलंब्बक्तं • • | • फलब्बंक्त | •• ६३ | वे ४ | नेवेद्यम्. •• | • नैवेद्यम् • • | | 3: 8 | |
| तिमिनिंदा •• | • मितिनिन्दा • | ६३ | રે હ | चण्डादि •• | • चण्डाधि • • | 1 | 2 8 | ,] |
| ini-iniqi | Learner de | 1 44 1 | , , , | • | • | - | | 1 |
| | | | | | | | | |
| ł | | | | | | | | |

| | **** | ঝ | गुदं | | ચ્ | दं | | पत्रं | ਼ ੍ਰਾਣਂ | पंक्तिः | _ અશુદ્રં | | ગુ હં | ı | पत्रं | ਧੂ ਤਂ | पंक्तिः | ***** | गु० |
|------|-------|--------------------------|-------|-----|---------------|-------|--------------|-------|----------------|---------|----------------------------|-----|------------------|-------|------------|--------------|---------|---------------|-------|
| แ็หแ | *** | भक्षत्वे ∙ ∙ | • • | | भक्ष्यत्वे | • • | • • | 63 | ૅર | Q | वेधा • • | • • | वेद्या · ँ · · | ٠. | 98 | 6 | 3 | * | 20 |
| | * | नैवैद्यम्. | • • | • • | नैवेद्यम् · · | • • | • • | 6,3 | २ | ६ | भ ^{प्} त्रो · · · | • • | भप्ते · · | • • | 98ં | 8 | e | * | |
| | * | मक्षत्व. | • • | | भक्यत्व | • • | • • | ६७ | २ | 6 | कुशामणि 🕠 | | क्ञायाणि 🕠 | • • | <i>૭</i> ૨ | ર | 2 | * | |
| 1 | ** | स्वागाव्न्ध | | • • | स्वरिगेवन्द | म्. | • • | ६९ | 8 | २ | अर्घातिरिक्त | • • | अर्घातिरिक्त · · | •• | 98 | 2 | 8 | * | |
| | सर | स्वकॅल्लोक | 5 • • | • • | स्वकल्लीक | • • | • • | ६९ | 8 | ६ | तत्क्षाणा · · · · | • • | तत्क्षणा · · · | •• | 93 | 9 | 9 | * | |
| Į | * | कारणान् | • • | • • | कारणम् | • • • | ٠. | ६९ | २ | 8 | प्रल्हाद् · · · | • • | प्रहाद ् · · · | • • | 93 | શ | વ | * | |
| | 米米米米米 | गृण्हामि | • • | • • | गृह्णमिएवं | हकारा | धो | | | | घण्टांब्वे · · · · | • • | घण्टाव्वै " • • | • • | 93 | 9 | Ç | 來 | |
| | * | | | | देशेणका | | ऽ त्र | | | | घण्टां · · · | • • | घण्टा · · · | • • | ७२ | २ | 9 | * | |
| | * | | | | पदेसर्वत्र | . • • | • • | ६९ | २ | 2 | नित्यंचन्दन · · | • • | नित्युचन्दन · · | • • | ७२ | २ | ६ | * | |
| | * | स्थंण्डिले <u>-</u> - | • • | • • | स्थण्डिले | • • | • • | ६९ | २ | 8 | भवति · · · | • • | भवन्ति · · · | • • | ७३ | 9 | 3 | 茶 | |
| | * | र्झनं •• | • • | | र्चने · · | • • | •• | ६९ | २ | 6 | प्रमाणिकः · · | • • | प्रामाणिकः 🕠 | • • | ७३ | 9 | ६ | * | 11811 |
| | * | मणिमंयी. | • • | • • | मणिमयी | | • • | 190 | 3 | 1 | कर्वक, · · | • • | कुरुवक 🕠 | • • | 98 | 9 | 8 | * | |
| | **** | | | | | | 1 | 7" | i 🤼 | 1 3 | CHZ44H | , | 31441 | - • ! | 36 | ١ ٧ | 1 6 | ************* | |

| | गुद्धं | | ्र ्ॢ शु | <u>दं</u> | 1 | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः | ्र अशुद्धं | | ् शुद्धं | प | त्रं पृष्ठं | पंक्तिः |
|-------------------|---|--|--|---|--|---|---|--|---|--|--|--|---------------|--|
| (पिथ्या • • | • • | • • | दापय्या | • • | ••• | 98 | ર | 3 | ञ्चूपमी · · · · | • • | पञ्चमी •• | 6 | 3 8 | 8 |
| ाद्र · · | • • | • • | वदर · · | • • | • • | 30 | २ | 8 | सब्बंय्यच •• | • • | सर्वययम् 🕠 | | | 8 |
| , लि त्थाः | • • | •• | कुलस्थाः | • • | • • | 30 | २ | 3 | जदन्ये · · · | •• | यद्ञ्ये · · · | 6 | ३ २ | 8 |
| स्य ∙ ∙ | • • | •• | शस्य · · | • • | ••• | 30 | २ | ६ | पूर्यु · · · · | •• | पश्चँ · · · | 6 | 8 8 | २ |
| | • • | • • | कुलस्थाः | • • | •• | 30 | २ | | लोकॉअ 😶 | • • | लोकाँ २॥ऽअ. | 6 | | ६ |
| रकीय ∙ ∙ | • • • | • • | पर्कीय · · | • • | •• | 90 | 2 | 0 | विष्णो · · · | • • | भगवन्विष्णो | 6 | | 8 |
| गद्यञ्च∙∙ | | | | • • | •• | 90 | 9 | 3 | जलंक्वा 😶 | •• | जलव्वाँ · · · · | 6 | | Ę |
| र्युर्धनि 🕶 | • • | •• | मुर्द्धनि · · | • • | • • | 90 | 9 | | हितंब्बदे 😶 | •• | हितव्वेंदे •• | 6 | ५ २ | 9 |
| येय · · | : | •• | व्ययम् • • | • • | •• | 90 | 9 | | विदु · · · | •• | विन्दु · · · | 6 | E 8 | Ġ |
| हेश्य · · | • • | •• | उहिर्य • • | • • | • • | 90 | 9 | 8 | वचानात् · · | •• | वचनात् 🕠 | | | Ę |
| हेरण्मवय | • • | • • | हिरण्मयव | • • | • • | ८१ | 8 | 8 | प्रदक्षिणंच्ये • • | | | | | 8 |
| | | | लक्षकम् • • | | | ૮૧ | 9 | 3 | नीराजमं • • | 1 | नीराजनं •• | 1 | 9 3 | é |
| | तित्थाः स्य · · ।तित्थाः रकीय · · ।धञ्च · · ।धनि · · येय · · हेर्य · · | दर · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | दर · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | दर · · · वदर · · वदर · · वदर · · वदर · · वितर्थाः · · व कुल्ह्याः स्य · · · चुल्ह्याः व कुल्ह्याः व कुल्ह्याः व कुल्ह्याः • · व कुल्ह्याः • • प्रकीय · · • प्रकीय · · • व्ययम् · · व्ययम् · • विहर्य · · • विहर्य · • विहर्य · • विहर्य · • विहर्य · • • • विहर्य · • • • विहर्य · • • • • • • • • • • • • • • • • • • | दर · · · वदर · · · वदर · · · · वदर · · · · वित्थाः · · · वुल्त्थाः · · · प्रकीय · · · · · व्याय म् · · · · व्यय म् · · · · विह्रय · · · · · · · · विह्रय · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | दर · · · वदर · · · । ितित्थाः · · · वदर · · · । ितित्थाः · · · वित्याः · · · । ितित्थाः · · · वित्याः · · · । ितित्थाः · · · वित्याः · · · । ितित्थाः · · · वित्याः · · · । ितित्थाः · · · वित्याः · · · । ितित्थाः · · · विव्याः · · · । िति · · · · । िति · · · · व्ययम् · · · · । ित्याः · · विद्ययः · · · । ित्याः · · विद्ययः · · · । ितित्याः · · विद्ययः · · · । | दर · · · · वदर · · · · ७६ तित्थाः · · · वुत्रत्थाः · · · 9६ त्य · · · · दास्य · · · · 9६ तित्थाः · · · दास्य · · · · 9६ तित्थाः · · · दुत्रत्थाः · · · 9६ तित्थाः · · · द्यास्य · · · · 99 ाद्य · · · · मूर्द्ध नि · · · · 9९ देश · · · व्ययम् · · · · 9९ हेश्य · · · • उद्दिश्य · · · 9९ | पिय्यो · · · · विषय्याँ · · · · 9६ १ १ दर · · · · · वदर · · · · · 9६ २ वदर · · · · · 9६ २ वदर · · · · · 9६ २ विषयाः · · · · 99 २ विषयाः · · · · 99 १ १ विषयाः · · · · 9९ १ विषयाः · · · · 9९ १ विषयाः · · · · 9९ १ १ विषयाः · · · · 9९ १ १ विषयाः · · · · 9९ १ | पिय्यों · · · · वीपय्यों · · · · 9६ १ ३ इ दर · · · · वदर · · · · · 9६ २ १ १ इ दर · · · · · 9६ २ ३ इ हिल्याः · · · · 9६ २ ३ हिल्याः · · · · 9६ २ ६ हिल्याः · · · · 98 २ ७ विच्याः · · · · 99 २ ७ विच्याः · · · · 98 १ १ १ विच्याः · · · · • • • • • • • • • • • • • • • | पियों · · · · वीपयोँ · · · · ७६ १ ३ ञ्चपमी · · · वदर · · · · ७६ २ १ सन्वैय्यच · · वदर · · · · ७६ २ १ सन्वैय्यच · · वित्याः · · · वहर्य · · · ः ७६ २ ३ जह्न्ये · · · वहर्य · · · ः ७६ २ ६ पुत्रुं · · · वित्याः · · · ः ७६ २ ६ पुत्रुं · · · वित्याः · · · ः ७६ २ ६ तो कॉ अ · · रितयाः · · · प्रकीय · · · · ७७ २ ७ विष्णो · · · विद्याः · · · ७८ १ ३ जलंक्वा · · विद्याः · · मूर्द्धनि · · · · ७९ १ १ विदु · · · विद्याः · · ः ७९ १ १ विदु · · · विद्याः · · · ः ७९ १ ४ वचानात् · · विद्याः · · · ः ७९ १ ४ वचानात् · · विद्याः · · · ः ७९ १ ४ वचानात् · · · | पिय्यों · · · · वीपय्यों · · · · ७६ १ ३ ञ्चपमी · · · · वदर · · · · ७६ २ १ सर्वय्यच्च · · · · हित्याः · · · वदर · · · · ७६ २ ३ जदन्ये · · · · हित्याः · · · वुह्न २ ६ पूर्तु · · · · हित्याः · · · वुह्न २ ६ तोकॉअ · · · · हित्याः · · · प्रकीय · · · · ७६ २ ६ तोकॉअ · · · · प्रकीय · · · · ७७ २ ७ विष्णो · · · · · । । । । । । । । । । । । । । | पियों · · · · वीपयोँ · · · · ७६ १ ३ ज्वपमी · · · पञ्चमी · · वदर · · · · ७६ २ १ सर्वय्यच्च · · · पर्वय्यंच · · सर्वय्यंच · · सर्वय्यंच · · · वहर्ये · · · पर्वेद्यंच · · · वहर्ये · · · पर्वेद्यंच · · पर्वेद्यंच · · · पर्वेद्यंच · · · पर्वेद्यंच · · · पर्वेद्यंच · · · पर्वेद्यं · · · · ७६ २ ६ त्रेकॉं अ · · · त्रेकॉं २॥ऽअ . रितेय्यं · · · परकीय · · · · ७६ २ ६ त्रेकॉं अ · · · त्रेकॉं २॥ऽअ . रितेय्यं · · · परकीय · · · · ७७ २ ७ विष्णो · · · · मगविन्विष्णो जिल्व्यां · · · विष्णो · · · · न्यंद्यं · · · विद्यं · · · · · विद्यं · · · · विद्यं · · · · · · विद्यं · · · · | पिय्यों | पिय्यों · · · · वीपय्यों · · · · ७६ १ ३ ज्चपमी · · · · पञ्चमी · · · ८३ १ वर · · · · वर · · · · ७६ २ १ सर्वय्यच · · · सर्वय्यच · · · ८३ २ २ इ हिल्याः · · · वहर्ये · · · · ८३ २ इ हिल्याः · · · वहर्ये · · · · ८४ १ हिल्याः · · · वहर्ये · · · · ८४ १ हिल्याः · · · वहर्याः · · · ७६ २ ६ होत्रॉञ · · · हीत्रॉचाः · · · ८४ २ इ होत्रॉञ · · · हीत्रॉचाः होत्रं · · · ८४ २ इ होत्रॉञ · · · हीत्र्वां होत्रं • · · ८४ २ इ हिल्याः · · · विष्णो · · · · मगविन्वणो · · ८५ १ इ हिल्याः · · · व्ययम् · · · · ७९ १ १ हिल्याः · · हिल्युः · · · ८५ १ इ हिल्याः · · व्ययम् · · · · ७९ १ १ विदु · · · विन्दु · · · ८५ १ इ व्ययम् · · · · ७९ १ १ विदु · · · विन्दु · · · ८५ १ इ व्ययम् · · · · ७९ १ १ विदु · · · वचनात् · · · ८७ १ |

| 学 ・ ・ ・ ・ ・ ・ ・ ・ ・ ・ ・ ・ ・ ・ ・ ・ ・ ・ ・ | अर् | ग्रदं | | : হা | હં | 1 | पत्रं | ਪੁ ਲੰ | ∣पंक्तिः | અ શુદ્ધં | | गुढं | पत्रं | ਉ ਣਂ | पंक्तिः | ****** | गु० |
|--|---|-------------------------|---|--|---|---|----------------------------|-------------------|-------------------|--|-----|---|--|-------------|-------------------|---------------------|--------|
| ************************************ | व्वॅजेत् · · देवेस्य · · पुरुषस्यते सयोगो · · सदुस्त्यज सहस्रंय्य शाहित्राम | ••• | • | ब्बॅजित् · · देवस्य · · पुरुषस्यतु सद्योंगो सुदुस्त्यज सहस्रव्यं शाह्माम | • | ••• | 66 66 66 68 68 | , e e e e e e e e | S & & & # W & M 9 | पूजाद्वार • वासान्यतमे • विस्व • • • वामेक्षेत्र • • नैऋत्र्या • • • | | देशेणकारोबीध्योत पदेसर्वत्र पूजागृहद्वार वासान्यतमेन विम्बएवंसर्व्वतान्त स्थ वकारोज्ञेयः ऑवामेक्षेत्र नैर्क्त्या | 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 | 440 044 | or so or or or or | ********* | |
| ·************************************ | मुधा - धायेत् मुद्धारेत् परकीयेनाः गृण्हन्ती | ं . ग्रुचिना | •• | मुद्धाः • • धार्येत् मुद्धरेत् • • परकीयणाः गृह्णन्तीएवं | गुचिना | • | 90 | 2 2 2 | A 19/ 0/ | दूर्व्वाङ्करा । । सम्पूज्यपदेत्, त्वंत्विष्णुना । । देहलींत्विलंघ्य | ••• | दूर्वाङ्कुरा · · · · सम्पूज्य · · · · · सम्पूज्य · · · · · दिव विवेद स्थाना · · · · दिहतीविवेत स्थाना · · · · दिहतीविवेत स्थाना · · · · दिहतीविवेत स्थाना स्याना स्थाना स | २ <u>७</u> २ <u>७</u> २ <u>७</u> | 0000 | (M) (M) | 李本本本帝 宋宋朱宋宋宋宋宋宋宋宋宋子 | ∥ ૬ ((|

| | , अर् | पुद | | गुउ | | पत्रं | <u> ਰੂਬੰ</u> | पंक्तिः | ्र अर् | रुद्धं | | ्र गु | द्धं | प | त्रं १ | ष्ठं | 情でののなめのなな ゆめxx c |
|---|--------------------|---------|-----|----------------|-------------|-------|--------------|---------|-----------------|--------|-------|--------------|------------|------|------------|------|------------------|
| | कम्ब लोत्तर | | • • | कम्बलोत्तरी | व्वॅ. 🐺 | ९८ | 8 | 4 | वर्णव्वायु | • •, | • •] | वणेठवायु | • • | 6 | 8 | 2 | 9 |
| ۱ | वेदिकायांवि | वन्यस्य | • • | वेदिकायाञ्वि | न्यस्य. | ९८ | १ | Q | पुरुषंव्विचि | न्त्य | •• | पुरुषव्विचि | न्त्य | ·· 5 | 00 | ١ ٢ | 9 |
| ı | स्वदिश्ण | • • | • • | स्वदक्षिणे 🕝 | • • • | ९८ | 8 | 9 | नसा · · | • • | • • | नासा • • | • • | 6 | 26 | 2 | २ |
| I | परात्पर | • • | • • | परापर • • | | ९८ | 2 | ३ | व्विचिन्त्य | • • | | व्विंचिन्त्य | • • | 8 | 36 | 2 | 8 |
| I | ऊ ध्वीध्व | • • | • • | ऊद्धीर्द्ध ∙ ∙ | • • • • | ९८ | २ | G | विद्यमियीं | • • | • • | वर्णमयीं | • • | 9 | ું ∫ | 2 | 9 |
| I | रक्षांविधाय | ••• | • • | रक्षा विवेधाय | • • • | ९९ | 8 | 8 | मूलाध्रो | • • | • • | मूलाधारो | • • | 9 | 2 | 2 | 4 |
| I | विस∙∙ | • • | • • | विश • | | ९९ | 8 | 8 | वय्वमि | • • | • • | वाय्वप्रि | • • | 9 | ο 3 | 2 | 4 |
| I | निभांव्विद्यु | | ٠. | निभाव्विं यु | | 99 | 9 | 8 | बिन्दून् | | • • | विन्दून्एवंर | नर्नित्रान | त ं | ` | ` | · |
| | हता ख्य | • • | | हताख्यानि | | 99 | 8 | Q | ļ | | 1 | स्थवकारे | ाज्ञेयः | | 04 | 8 | ६ |
| l | संयोज्य | | | सर्वाज्य ए | | , , | • | , | वकारादि | • • | • • | बकारादि | • • | 6 | 06 | 3 | ર |
| I | | | | परसवर्णस | हितोज्ञेय : | ९९ | 9 | e | ध्यानन् | • a | • • | ध्यानम् | • • | 8 | ૦ ૯ | 2 | ૪ |
| ı | बिन्दु · · | | ٠. | | | ९९ | ર | 8 | सु धाद्य | • • | • • | सुधाढचे | • • | 8 | ૦ ૯ | 2 | ધ |
| ı | . , 3 | | | · • | | • • • | ' ' | , - | 14 | | | 4 . | | , , | * 1 | • , | ` |

| | **** | | | | | | | | | | | | | | ***************** | |
|------------------|-------|------------------|-----|--------------------|-----|-------|--------|---------|----------------------|---|------------------------------|---------|--------|---------|-------------------|---------|
| 7010 | * | अशुद्धं | | ्रा उ | | पत्रं | ਪ੍ਰਸ਼ਤ | पंक्तिः | ् अशु | र्द | ्र शुद्धं | े पत्रे | ੍ਰਾ ਝੰ | पंक्तिः | \mathfrak{T} | ग्रु० |
| पूर्ण ० ॥ ६ ॥ | * | मुण्डमातंत्र • • | | मुण्डमालातन्त्रम् | • • | १०६ | ~3 | २ | हसोः • | | हो: | 993 | | 2 | * | |
| | *** | उकारान् · · | | उकारान्तान् · · े | ٠. | 800 | 8 | २ | ध्यातंमिति | • | ध्यानमिति •• | 998 | | 8 | * | |
| | * | मूलमन्त्रस्यस्य | | 200 | ٠. | 800 | 2 | 2 | N 1 1 1 - 3 | • | सगुण्म्∙∙∙∙ | ११४ | 9 | Ę | * | |
| | * | तत्रऋष्यादि · · | • • | ततेऋष्यादि · · | ٠. | 206 | २ | Q | सुभनीहरम् | • | | 228 | २ | २ | 來 | |
| ı | 1 4 1 | सङ्गमंव्विभाव्य | • • | सङ्गमिव्वभाव्य | ٠. | १०९ | 9 | 8 | दवतायाः | • • • • • | सुमनोहरम् · · देवताया · · | 996 | 9 | २ | * | |
| | **** | कर्त्तव्यंयदि | ٠. | कर्त्तेव्यय्यँदि. | • • | 290 | 9 | 8 | प्राणान्प्रतिष्ठा | पयेत् \cdots | 000 · · · · | ११५ | 9 | 8 | * | |
| | * | मेतदर्घ · · · | • • | मेतदर्घ · · | ٠. | 990 | 2 | 3 | | ` | न्तिष्ठन्तु •• | 996 | | 8 | * | |
| | * | हमिति · · · | ٠. | हूमिति · · · | ٠. | १११ | 8 | 4 | शालि • | • • • • • | शाल · · · | 996 | 9 | 4 | * | |
| | * | नयन्नयन 🕠 | ٠. | नयन • • • | | 222 | 8 | 4 | देवतायाः | • | देवतां · · · | ११५ | | 3 | * | |
| | * | सङ्कलीकृत्य | | सकलीकृत्य • • | | 255 | 2 | 9 | मितीरितम् | • | मीरितम् · · | ११६ | 9 | 3 | 本 | |
| | * | सस्थाप्य 🕠 | ٠. | 1 11 1 11 1 | | 255 | 2 | e | आचमनीयं | अमुक∙∙ | आ्चमनीयममुक | 550 | 9 | 8 | * | 11 6 11 |
| | * | ज्ञानंव्वेराग्य | ٠. | ज्ञानवैवँराग्य · · | | 993 | 8 | 4 | 1 - 1 - 1 | | पीते · · · | 996 | | 3 | * | ॥६॥ |
| | * | | | • | | | , , | , | , | | , | • • | , , | | * | |
| | *** | | | | | | | | | | | | | | * | |
| | 14 | , | | | | | | | | | | | | | Ĺ | |

| 10 11 | * * * * * * * * * | । शुद्धं | । पत्रं | . • | केः। अग्रुद्धं | गुद् | पत्रं पृष्ठं | पंक्तिः 💥 ग्र |
|-------|--|---------------------------------------|------------------|-----------------|---|------------------------------------|-----------------------------|---------------------------------------|
| 1. | 🔆 पर्ध्यन्तंआरात्रिक | · सन्त्रासद्धः म् पर्यन्तमारात्रिक | €E 0.24 | , , | १ हँसः · · · · · ः ३ भित्वत्वबुद्धिः | ∙ ह3ेसः ∙ ∙ | १३५ २ | 3 ** |
| | ्रुं, लिपिव्यना ∙ ∙ | · · लिपिविवँना · · | १ २ ६ | | ३ भित्वत्वबुद्धिः १ वरध्याः ः | ·· भिन्नत्वबुद्धिः ·· वुद्ध्याः | 530 5 | くが |
| | | • • पूजावित्रँस्तरतः | • । १२६ | | ६ फिलदर्शनम् 🕠 | • फलप्रदर्शनम | 939 2 | く マ ネ |
| | क्ष. पूजाव्यस्तरतः श्रमसङ्ख्या • • द्विगणानिबिडा | • जपसङ्ख्यां • • | 936 | 9 9 | ४ नैःष्क्रम्म्याः • • | •• नैष्कस्मयी •• | C 6/86. | ₹ * |
| | क्रे पिनाकधूषेनमः | · दक्षिणानिविडा · पिनाकधुजेनमः | •• १३० | | २ महप्टब्बा •• | 😶 मदृष्टव्याँ. 🕠 | • १३८ २ | が、 |
| [· | ₩ शिस्त्य जेव | · विश्वद्यंजेत् · | ·· १३२ | | २ बुत्ध्या · · · ६ सुर्थे · · · · | ः बुद्धाः | ४,३६ २ | ٩ * |
| | ₩ भ भ १ | • पादोदकम् • • | ·· १३३ ·· १३३ | | ६ सुर्थे · · · · । ४ यात्वेनं, · · | · सूर्य · · · पात्वेनं · · · · | 580 8 | 3 ※ |
| li | भू गुण्हन्ति | • गृह्धन्ति. | १३४ | | à | THE TAX TO SEE | 480 . 4 | 4 * |
| | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | _ | | , . | | | | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · |
| | भू एकचत्वारिंशत्पत्र ४ | ।इतायपृष्ठप्रथमपङ ्स | विभिधाना | देत्यस्यामेत्रु | टिः ॥ पवित्रलक्षणं | अन्दोगपरिशिष्टे अनन्त | रिर्ग <i>ि</i> भणंसाम्रङ्को | शन्द्रद 🎇 " |

लमेवच प्रदिशमात्रविवेषेत्रेयस्पवित्रय्येत्रकुत्रचित् द्विदलंद्विसङ्ख्याकं दलं पत्रत् अनन्तरगंब्धिणम् तथाच गर्ब्भम् गर्विभ अन्तरग र्बिभचत्यस्काचतुर्थङ्याद्यम् छान्दसत्वातपुछिङ्गनिईदाः यत्रुज्ञचित् सन्ध्यावन्दनातिरिक्तेपिकम्मीण इदमेवपवित्ररुक्षणम् पवि त्रे सज्ञ्यासपद्धतिलिखितम् वाक्यम्पटन्ति सव्यापसव्यवलितम्ब्रह्मयन्थसमन्वितम् लङ्घयेत्यथमम्पर्व्व द्विपर्व्वचैवलङ्घयेत् लङ्घये ॥ एकचत्वारिंदात्पत्रिद्वितीयपृष्ठस्यचतुर्थपं क्तीवदन्तीत्यस्यायेत्रृटिः ॥ अनन्तर्ग त्पर्वमेकन्त्वितिपाउन्तर्मित्याचारचिन्तामणिः॥ ब्भिणमित्यादिपवित्रतक्षणमुक्ता अनन्तरर्गब्भिणमन्तरर्गब्भिग्रुन्यम् तथाचद्यौनकः अनन्तस्तरुणौयौत् कुद्यौपादेदासम्मितौ अन खंबेदिनौसायौतौपवित्राभिधेयकौ एतदभावे कुदापत्रचतुष्टयन्त्रयव्वा चतुर्बिभःकुदापत्रैदचत्रिभिद्द्यामयापिवा पवित्रङ्कारयेन्नि इतिसमुद्रकर्भतवचनात् विद्याकर्वाजपेयिभृतम् पवित्रन्तुद्दिजः कुर्य्यात्कुदापत्रद्वयेनतु र्य्यचैकपत्रेणकुत्रचिदितिचलिखन्ति दाक्षिणात्यास्तु दाङ्खः अनन्तर्गे क्रिणंसायमितिवचनमुक्ता हारीतः पवित्रंब्राझणस्यैव चतु ब्भिईब्भिपिञ्जुलैः एकैकन्त्यूनमुद्दिष्टव्वॅण्णैवण्णैयथाक्रमम् स्मृत्यर्थसारे सर्व्वेषाव्वाँभवेद्वाभ्याम्पवित्रङ्यन्थितन्नवम् रतावल्याम् इयो स्तुपर्व्वणोर्म्मध्येपवित्रन्धारयेद्भुधः हेमाद्रौस्कान्दे अनामिकाधृतादर्ब्भाह्येकानामिकयापिवा द्वाभ्यामनामिकाभ्यान्तुधार्य्येदर्ब्भपवित्रके पवित्रामावेतु तत्रैवस्त्रमन्तुः समूलायौविगन्भीतुकुद्यौद्दौदक्षिणेकरे सन्येचैवतथात्रीन्वैविभृयात्सर्व्वकर्मस्वित्याहुः

